चांदी का बटन



आर० एल० स्टीवेन्सन के प्रसिद्ध उपन्यास
'किडनैप्ड' का सरल रूपांतर

चांदी का बटन

आर. एल. स्टीवेन्सन के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'किडनैप्ड' का सरल हिन्दी रूपान्तर



रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

मूल्य : पच्चीस रुपये (Rs. 25.00)

संस्करण : 2006

ISBN-13 : 978-81-7483-044-9
ISBN-10 : 81-7483-044-8
Abridged Hindi Version of KIDNAPPED (Novel)
by Robert L. Stevenson

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

चांदी का बटन





चांदी का बटन

मेरी यह कहानी बड़ी साहसपूर्ण घटनाओं से भरी हुई है। इसका आरम्भ होता है सन् 1751 के जून महीने के एक सवेरे से। उस दिन सवेरे मैंने आखिरी बार अपने घर में ताला लगाया था और फिर मैं अपनी यात्रा पर निकल पड़ा।

जब मैं सड़क पर पहुँचा तो आसमान में सूरज कुछ चढ़ आया था। सवेरे से इस घाटी में चारों तरफ जो कुहरा छाया हुआ था, वह सूरज की गर्मी पाकर हटता जा रहा था। हमारे परिवार के पुराने मित्र और हमारे नगर के एक पादरी मि. कैम्पबेल मुझको कुछ दूर तक पहुँचानेवाले थे। वे बगीचे के फाटक पर मेरी राह देख रहे थे। मुझे देखकर वे बोले, "डेविड बेटे, मैं तुमको किनारे तक छोड़ने जाऊँगा। वहाँ से तुम अपने रास्ते चले जाना।"

कुछ देर तक हम लोग बिना बोले चुपचाप चलते रहे। इतने में उन्होंने कहा, "क्यों डेविड, क्या तुम्हें अपना एसेण्डेन नगर छोड़ते हुए बहुत अफसोस हो रहा है!"

मैंने कहा, "भला यह मैं अभी कैसे बता सकता हूँ साहब? अगर मुझे यह पता होता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ और मेरे भाग्य

में क्या लिखा है तो मैं आपको ठीक-ठीक बता सकता कि मुझे अपना नगर छोड़ते हुए प्रसन्न होना चाहिए या दुःखी। वैसे एसेण्डेन एक बहुत अच्छी जगह है और मैं यहाँ सुख से रहा हूँ।"

मि. कैम्पबेल ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, "देखो बेटे, मुझे तुम्हारा भविष्य कुछ हद तक मालूम है। यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँ। जब तुम्हारी माता का स्वर्गवास हो गया और तुम्हारे पिता की बीमारी बढ़ने लगी तो एक दिन उन्होंने मुझको एक चिट्ठी सौंपी और कहा कि यह मेरे बेटे के लिए वसीयतनामे की तरह काम में आएगी। इसके बाद तुम्हारे पिता ने कहा था कि जैसे ही उनकी मृत्यु हो जाए, मैं यह चिट्ठी तुम्हें सौंप दूँ और क्रैमोंड गाँव में शा घराने के पुश्तैनी मकान के लिए तुमको रवाना कर दूँ। असल में तुम्हारे पिता भी वहीं के रहनेवाले थे और वे चाहते थे कि तुम भी वहीं चले जाओ।"

मैंने आश्चर्य से उनकी ओर देखा और पूछा, "भला मेरे पिता का शा घराने वालों से क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

मि. कैम्पबेल ने कहा, "हाँ, इस सम्बन्ध में ठीक-ठीक तो कोई कैसे कह सकता है, लेकिन बेटा, उस परिवार के नाम और तुम्हारे परिवार के नाम में कोई फर्क नहीं है। वे लोग बेल्फोर के शा कहलाते हैं। बड़ा पुराना और बड़ी इज़्ज़त वाला ऊँचा घराना है।" फिर उन्होंने मेरे हाथ में एक लिफाफा थमा दिया, जिस पर ऐबेनेज़ेर बेल्फोर का नाम लिखा हुआ था और उसके आगे लिखा था, मेरे बेटे डेविड बेल्फोर के लिए।

मैंने मि. कैम्पबेल से हिचकिचाते हुए पूछा, "क्या अगर



आप मेरी जगह होते तो इस तरह एक अनजान जगह में जाना पसंद करते?"

वे बोले, "हाँ-हाँ, क्यों नहीं। तुम क्रैमोंड दो दिन बाद पहुँच जाओगे। यह गाँव एडिनबरा के पास ही बसा हुआ है। अगर कोई ऐसी बात हुई और तुम्हारा वहाँ रुकना संभव नहीं हुआ तो तुम दो दिन की यात्रा के बाद वापस यहाँ आ सकते हो। बस, पैदल ही तो चलना है तुमको। लेकिन मुझे आशा है कि उस परिवार के लोग प्रेम से तुम्हारा स्वागत करेंगे और अपने साथ रखने के लिए तैयार हो जाएँगे।"

इस तरह पादरी साहब ने मुझको विदा किया और मैं अपनी लाठी के सिरे पर एक गठरी को कन्धे से लटकाए आगे बढ़ चला। किनारे पर पहुँचने के बाद मैं दाहिनी तरफ मुड़ गया और पहाड़ियां पार करने लगा। अभी मुझे दो दिन तक चलना था।

दूसरे दिन दोपहर को मैं एक पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा। वहाँ से दूर-दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ता था। कुछ दूर तक लम्बी पहाड़ी के पास एक डिनबरा शहर बसा हुआ था और उसके पास ही समुद्र लहरा रहा था। एडिनबरा के किले पर झण्डा फहरा रहा था, जो बहुत ही छोटा-सा दिखाई देता था। बन्दरगाह में कुछ जहाज़ खड़े थे और कुछ आ-जा रहे थे।

कुछ दूर चलने पर मैं एक गड़रिये के घर के पास पहुँचा। उसने मुझको क्रैमोंड का रास्ता बता दिया। इधर-उधर भटकते हुए अन्त में मैं क्रैमोंड के पास पहुँचा। वहाँ मैंने शा घराने के लोगों का मकान पूछना शुरू किया। मैंने देखा कि मेरे इस प्रश्न पर लोग आश्चर्य से मेरी ओर देखते थे।

पहले तो मैंने सोचा कि शायद मेरा पहनावा और बोलने का ढंग देहाती है, इसलिए ये लोग कुछ अचम्भे में पड़ गए हैं और शायद सोच रहे हैं कि शा परिवार जैसे बड़े घराने का पता मैं क्यों पूछ रहा हूँ। लेकिन थोड़ी ही देर बाद मुझे उन लोगों के व्यवहार से यह अन्दाज़ लग गया कि असल में मुझमें कोई विचित्रता नहीं है, बल्कि उस घराने के साथ ही कोई रहस्य जुड़ा हुआ है और उसका पता पूछने पर लोगों को आश्चर्य हो रहा है।

ऐसी हालत में मुझको बार-बार अपने नगर एसेण्डेन की याद आ रही थी, जहाँ का हर आदमी मुझको पहचानता था और मुझे चाहता था। अगर तुरन्त वहाँ लौटा जा सकता होता, तो मैं फौरन इस अजनबियों के शहर में भागकर एसेण्डेन लौट जाता, लेकिन अब मैं इतनी दूर आ चुका हूँ।

शाम होते-होते एक बुढ़िया से मेरी मुलाकात हुई, जो एक पहाड़ी पर से उतर रही थी। जब मैंने उससे शा परिवार के मकान का पता पूछा तो पहले तो उसने बड़े आश्चर्य से मेरी ओर घूरकर देखा, फिर वह मुझे पहाड़ी के सिरे पर ले गई और वहाँ से उसने उसके पास की घाटी में लम्बे-चौड़े मैदान के बीच खड़े एक बड़े भारी मकान की ओर इशारा कर दिया। वह मकान खण्डहर जैसा मालूम होता था। वहाँ तक कोई रास्ता ही नहीं जाता था। लगता था, जैसे वहाँ कोई रहता ही नहीं। उसकी चिमनियों से धुआँ भी नहीं निकल रहा था।

उस स्त्री ने घृणा से उस मकान की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह रहा शा खानदान वालों का मकान ! खून से यह बना है, खून ने ही इसको बनने से रोका है और खून ही इसको

धूल में मिला देगा। बुरा हो इस मकान का और इसमें रहने वालों का। अगर तुम वहाँ जाओ तो उन लोगों से कह देना कि मैं, जेनेट, उनके और उनके मकान के बारे में क्या कह रही थी। सत्यानाश हो शा खानदान वालों का और उनके इस घर का!''

इस तरह शाप देकर वह स्त्री वहाँ से चलती बनी। मैं अकेला वहाँ खड़ा रह गया। उसकी बात सुनकर मेरा बुरा हाल था। उस ज़माने में लोग भूत-चुड़ैल में विश्वास करते थे और किसी के शाप से डरते थे। मारे घबराहट के मेरी तो हालत खराब थी। जब उसने दो-तीन बार खून का नाम लिया तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं वहीं बैठकर उस मकान को कुछ देर तक देखता रहा। वह मकान तो सचमुच में बड़ा डरावना मालूम पड़ता था, लेकिन उसके आसपास का दृश्य बड़ा सुहावना था। सूरज डूब चुका था। आकाश में शाम का हल्का पीला प्रकाश फैला हुआ था। अचानक मैंने देखा कि उस मकान में धुएँ की हल्की-सी लकीर ऊपर उठने लगी।

मैं किसी तरह एक धुँधली पगडण्डी पर रास्ता खोजते हुए आगे बढ़ने लगा। जब मैं उस मकान के पास पहुँचा तो मैंने देखा कि वह अधूरा ही बना था। देखने से लगता था कि वहाँ कोई शानदार इमारत बनने वाली थी। लम्बी-लम्बी, चौड़ी सीढ़ियाँ ऊपर तक चली गई थीं। ऊपर ऊँचे-ऊँचे खम्भों का लेकिन बिना छत का एक बरामदा बना हुआ था। धीरे-धीरे मैं मकान के दरवाज़े पर पहुँचा, जहाँ नक्काशी का बहुत बढ़िया काम किया हुआ था। लेकिन वह भी बरसों से अधूरा पड़ा था। अब अंधेरा कुछ घना होने लगा था। अन्दर कहीं आग जल रही थी, जिसका धुंधला प्रकाश खिड़कियों से दिखाई देता था। पास

पहुँचने पर मुझे तश्तरियों की हल्की-सी खड़खड़ाहट सुनाई दी और फिर किसी बूढ़े आदमी के लगातार खाँसने की आवाज़ आई। लेकिन अन्दर कहीं किसी के बातचीत करने की आवाज़ नहीं आ रही थी।

मैंने जाकर दरवाज़े पर डरते-डरते थपकी दी। फिर मैं किसी के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। मकान में एकदम चुप्पी छा गई। तश्तरियों की खड़खड़ाहट बन्द हो गई। सिर्फ बरामदे के खम्भों के आसपास चमगादड़ मंडराते रहे। मैंने फिर से दरवाज़ा थपथपाया। अन्दर जो भी था, मेरी आवाज़ सुनकर बिलकुल चुप हो गया था और दम साधे सब कुछ सुन रहा था।

मेरा एक मन तो हुआ कि यहाँ से तुरन्त भाग निकलूँ। लेकिन साथ ही मुझे बड़ा गुस्सा भी आ रहा था, क्योंकि अन्दर कोई आदमी ज़रूर था। और वह बाहर नहीं आ रहा था। मैंने दरवाज़े पर ज़ोर-ज़ोर से लात मारना और मि. बेल्फोर का नाम पुकारना शुरू किया। कुछ ही देर में पहली मंज़िल की एक खिड़की खुली और उसमें से लम्बा टोपा लगाए एक आदमी ने झाँका। वह अब भी रह-रहकर खाँस रहा था। उसने पूछा, "क्या है छोकरे? क्या चाहता है तू?"

मैंने ऊपर देखते हुए कहा, "मैं एक चिट्ठी लेकर मि. एबेनेज़ेर बेल्फोर के पास आया हूँ। क्या वे अन्दर हैं?"

बुड्ढे ने जवाब दिया, "ठीक है, तुम चिट्ठी दरवाज़े के पास छोड़ दो और यहाँ से चलते बनो!"

मैंने कहा, "नहीं, मुझे यह चिट्ठी मि. बेल्फोर के हाथ में देनी है। इसमें मेरा परिचय दिया हुआ है।"

उसने चिढ़कर बड़ी रुखाई से कहा, "क्या मतलब! कैसा परिचय! तुम कौन हो?"

मैंने उसको अपना नाम बताया और अपने पिता का भी नाम बताया। अचानक मैंने अंधेरे में देखा कि बुड्ढा हाथ में एक पुराने ढंग की बन्दूक भी लिए था। मेरे पिता का नाम सुनते ही वह कुछ चौंका और बोला, "क्या तेरा बाप मर गया?" और मेरे उत्तर को सुने बिना ही वह खिड़की में गायब हो गया।

थोड़ी देर बाद मैंने दरवाज़े के पास उसकी आहट सुनी। शायद उसने बन्दूक दीवार से टिकाकर रखी और फिर भड़-भड़ाकर दरवाज़ा खोला। मैं उसको देखता ही रह गया। वह खुद ही बोला, "ज़रूर तेरा बाप मर गया होगा और इसलिए तू यहाँ खड़ा मेरा दरवाज़ा तोड़ रहा है। अच्छा जब तू आ ही गया है, तो आ, अन्दर आ जा।" यह कहकर वह मुझको कन्धे से खींचता हुआ दरवाज़े के भीतर ले गया और फिर उसने तुरन्त दरवाज़ा बन्द कर दिया।





: 2 :

बुड्ढे ने दरवाज़ा बन्द करके जल्दी-जल्दी उसकी सांकलें बन्द कर दीं और एक मोटी-सी लकड़ी उसके पीछे लगा दी। फिर वह बोला, "जाओ, रसोईघर में चले जाओ। और खबरदार, वहाँ किसी चीज़ को छूना मत!" यह कहकर वह फिर से दरवाज़े को मज़बूती से बन्द करने में लग गया। मैं चुपचाप उधर ही बढ़ चला जिधर से आग की रोशनी आ रही थी। मैंने वहाँ जाकर देखा कि एक कोने में अच्छी तेज आग जल रही है। रसोईघर लगभग सूना पड़ा था। एक तरफ टेबल पर एक प्याले में कुछ खाने को रखा था और पास ही शराब का एक प्याला रखा था।

तब तक वह बूढ़ा लौट आया और मुझको ऊपर से नीचे तक घूरकर देखने लगा। देखने में वह कुछ दुष्ट और डरावना-सा मालूम होता था। उसकी दाढ़ी कुछ-कुछ बढ़ी हुई थी। उसका देखने का ढंग भी बड़ा विचित्र था। उसकी आँखें बराबर मुझ पर लगी थीं, लेकिन फिर भी वह मेरे चेहरे की ओर नहीं देख रहा था। अन्त में उसने पूछा, "क्या खाओगे तुम? उस प्याले में थोड़ी सी लप्सी पड़ी है, उसको खा लो!"

मैंने कहा, "और आप क्या खाएँगे?"

बूढ़े ने खाँसते हुए और मेरे घुटनों की ओर घूरकर देखते

हुए कहा, "खा लो तुम उसको। मैं शराब पी लूँगा, इससे मेरी खाँसी भी हल्की हो जाएगी।" यह कहकर उसने शराब का प्याला उठा लिया। वह शराब पी रहा था, लेकिन उसकी एक आँख बराबर मुझ पर लगी हुई थी। अन्त में वह बोला, "लाओ, वह चिट्ठी कहाँ है?"

मैंने बूढ़े से कहा, "वह चिट्ठी मि. बेल्फोर के नाम है, तुम्हारे लिए नहीं है।"

वह बोला, "तो तुम क्या समझते हो, मैं कौन हूँ? मूर्ख लड़के, मैं ही बेल्फोर हूँ। लाओ, मुझे अलेक्ज़ेंडर की चिट्ठी दे दो!"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "क्या तुम मेरे पिताजी का घर का नाम जानते हो?"

वह बोला, "भला मैं नहीं जानूँगा तो और कौन जानेगा! वह मेरा सगा भाई था। मैं तुम्हारा चाचा हूँ। लाओ, मुझे चिट्ठी दे दो और इस कुर्सी पर बैठ जाओ।"

मैंने चिट्ठी अपने चाचा को दे दी और लप्सी खाना शुरू किया। चाचा ने चिट्ठी को बार-बार अपने हाथ में उलटते-पलटते हुए पूछा, "क्या तुमने इस चिट्ठी को पढ़ लिया है? ओह, इसकी मुहर तो अभी टूटी नहीं है, इसलिए इसको शायद तुमने अभी पढ़ा नहीं है। अच्छा, यह बताओ तुम यहाँ क्या करने आए हो?"

मैंने डरते-डरते कहा, "मैं तो यहाँ आपको यह चिट्ठी देने आया हूँ।"

चाचा ने व्यंग्य से हंसते हुए कहा, "चिट्ठी देने आए हो! बिलकुल झूठ बोल रहे हो। तुम यहाँ सिर्फ मुझे चिट्ठी देने नहीं आए हो, बल्कि किसी उम्मीद में आए हो। तुम्हारा मतलब कुछ और ही है। मुझको बनाने की कोशिश मत करो। तुमने सोचा

होगा कि चलो, चाचा के यहाँ कुछ मिल जाएगा। क्यों, है न! मैं सब जानता हूँ।"

चाचा का यह व्यवहार मेरी समझ में नहीं आ रहा था। उनकी बात सुनकर मुझे बड़ा बुरा लगा। फिर भी मैंने शान्ति से कहा, "भला यह आप क्या कह रहे हैं! पिताजी के स्वर्गवास के बाद जब मुझे यह पता चला कि मेरे कुछ धनी रिश्तेदार भी हैं तो मैंने इतनी उम्मीद ज़रूर की थी कि वे लोग मुझे बिलकुल अनाथ नहीं रहने देंगे और मेरी मदद कर देंगे। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं किसी तरह की भीख चाहता हूँ। मैं आपसे भी कुछ माँगने के लिए यहाँ नहीं आया हूँ। मुझे सिर्फ मदद की ज़रूरत है।"

"बस, बस! ज़्यादा बक-बक न करो!" चाचा ने कुछ चिढ़कर मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा, "तुम्हें बहुत बोलना आता है! अच्छा लाओ, कटोरा मुझे दे दो। तुम खा चुके, अब ज़रा मैं भी अपने पेट में कुछ डाल लूँ।" यह कहकर उन्होंने मेरे हाथ से लप्सी का कटोरा ले लिया। जल्दी-जल्दी चम्मच चलाते हुए उन्होंने थोड़ी ही देर में कटोरा खाली कर दिया। फिर कटोरा एक तरफ सरकाकर और एक डकार लेकर उन्होंने अपने लिए गिलास में थोड़ी-सी शराब और डाली। शराब की दो-एक चुस्कियाँ लेकर वे एकदम बोले, "तेरा बाप भी बड़ा अज़ीब आदमी था। दूसरे लोग भले ही उसकी तारीफ करें, लेकिन मुझे वह कभी भी पसन्द नहीं आया। उससे मेरी कभी नहीं पटी। खैर जाने दो, तुम्हारा इन बातों से कोई मतलब नहीं। लेकिन देखो न, उस बेईमान ने तुमको यह तक नहीं बताया कि तुम्हारा कोई चाचा भी है। और वह ज़िन्दा है! उसको मेरे नाम से भी नफरत थी!"

इतना कहते-कहते उन्हें ज़ोर से खाँसी आ गई। खाँसने के

बाद एक कोने में थूककर वे फिर से शराब पीने लगे। फिर अचानक उन्होंने पूछा, "तुम्हारे बाप को मरे कितने दिन हुए?"

"यही कोई तीन हफ्ते हुए।"

"हूँ, तीन हफ्ते हुए?" फिर मुँह बिचकाकर उन्होंने आगे कहा, "सचमुच बड़ा अज़ीब आदमी था तेरा बाप, एलेक्जेंडर। बड़ा चुप्पा आदमी था। किसी को अपने मन की थाह तक नहीं लगने देता था। वह मेरा भाई था, लेकिन जैसे दुश्मन से भी बढ़कर था।"

इतना कहकर चाचा फिर कुछ चुप हो गए और शराब पीने लगे। बीच-बीच में वे न जाने क्या बड़बड़ाते थे, और बार-बार एक कोने में थूकते जाते थे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। ऐसे आदमी और ऐसी जगह की मैंने कल्पना तक नहीं की थी। इस बड़ी भारी उजाड़ इमारत में मेरे इस बूढ़े और चिड़चिड़े चाचा को छोड़कर और कोई नहीं रहता था। आस-पास काफी दूर तक कोई बस्ती भी नहीं थी। चाचा को देखकर मुझे बड़ा डर लग रहा था। इस सुनसान जगह में ऐसे आदमी के साथ मुझे रहना है, यह सोचकर मेरा दिल बैठा जा रहा था। मुझे रोना आ रहा था और पादरी साहब पर गुस्सा भी आ रहा था कि उन्होंने क्यों मुझे ऐसी जगह भेजा। मेरा मन होता था कि यहाँ से भाग निकलूँ और फिर कभी लौटकर नहीं आऊँ। लेकिन रात काफी बीत चुकी थी और यहाँ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ नहीं था, इसके अलावा भागने का कोई रास्ता भी नहीं था क्योंकि चाचा ने मुझे अन्दर लेकर दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लिया था।

इतने में अचानक चाचा ने सिर उठाया और काफी देर तक मेरी ओर घूरते रहने के बाद वे बोले, "खैर मरने वाला मर गया,

उसकी बात छोड़ो। अब जब तुम आ ही गए हो, तो कोई बात नहीं है, यहीं रहो। काफी रात हो गई। चलो, तुम्हें सोने की जगह बता दूँ।''

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे बिना कोई दीया जलाए या हाथ में मोमबत्ती लिए अंधेरे में ही टटोल-टटोलकर आगे बढ़ने लगे। मैं भी गिरते-पड़ते उनके पीछे-पीछे चल रहा था। अंधेरे गलियारे और बरामदे से होते हुए और दो-एक अंधेरे कमरों को पार करते हुए वे मुझे एक छोटे-से कमरे के पास ले आए और फिर उसका ताला खोलकर बोले, ''जाओ यहाँ एक खटिया पड़ी है, उस पर सो जाओ।''

मैं दो-एक कदम कमरे में जाने के बाद रुक गया और उनसे कमरे में रोशनी करने को कहने लगा तो वे बोले, ''अरे यहाँ रोशनी की क्या ज़रूरत है। बाहर चाँद तो चमक ही रहा है। मुझे घर में जगह-जगह दीया जलाना पसन्द नहीं!'' मैं कुछ कहूँ इसके पहले ही उन्होंने बाहर से कमरे का दरवाज़ा बन्द कर दिया, और फिर मैंने सुना कि वे ताला लगाकर वहाँ से चल दिए।

मेरी समझ में नहीं आया कि चाचा की इस हरकत पर रोऊँ या हँसूं। वह कमरा बहुत ठण्डा था। बिस्तर भी बर्फ की तरह



ठण्डा था। लेकिन सौभाग्य से मैं अपना बण्डल साथ ही उठाता लाया था। उसमें मेरा कम्बल भी था। अंधेरे में मुझको कहीं खटिया नहीं दिखाई दी। मैं कम्बल ओढ़कर ज़मीन पर ही लेट गया। मैं बहुत थका हुआ था, इसलिए थोड़ी ही देर में मुझे नींद आ गई।

सवेरे जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि वह बहुत बड़ा कमरा था। तीन बड़ी-बड़ी खिड़कियों में से धूप का उजाला अन्दर आ रहा था। दस-बीस साल पहले यह कमरा ज़रूर बहुत सुन्दर रहा होगा, लेकिन अब तो धूल और मकड़ी के जालों से भरा हुआ था। चूहों ने कई जगह छेद कर रखे थे और दीवारों का पलस्तर गिर रहा था। बाहर धूप फैली हुई थी, लेकिन अन्दर कमरे में बहुत ठण्डक थी। मैंने दरवाज़ा भड़भड़ाया और चाचा को आवाज़ देना शुरू किया। अन्त में कुछ देर बाद आकर उन्होंने मुझे बाहर निकाला।

इसके बाद वे मुझे मकान के पीछे ले गए, जहाँ एक कुआँ था। कुएँ से पानी खींचकर मैंने हाथ-मुँह धोया और फिर मैं रसोई-घर में लौट आया। वहाँ चाचा ने आग जला रखी थी और लप्सी पक रही थी। इस समय टेबल पर दो प्याले और सींग के बने हुए दो बड़े चम्मच रखे हुए थे। पास ही शराब की एक बोतल और छोटा-सा एक प्याला पड़ा था। चाचा ने मुझ से पूछा कि क्या तुम भी शराब पीओगे। हमारे देश में जाड़े में सब लोग शराब पीते हैं। जैसे तुम लोग अपने देश में पानी पीते हो, वैसे ही हम लोगों को शराब पीनी पड़ती है। चाचा ने मेरे जवाब की प्रतीक्षा किए बिना ही एक दूसरा छोटा-सा गिलास निकाला और फिर अपने गिलास में से आधी शराब मेरे गिलास में डाल दी।

इसके बाद चाचा अपना पाइप निकालकर तम्बाकू पीने लगे



और मुझ से बातें करने लगे। अब हम दोनों में काफी दोस्ती हो गई थी। दोपहर में भोजन की जगह हम लोगों ने ठण्डी लप्सी खाई और फिर शाम को गरम लप्सी खाई। मैंने सोचा कि शायद चाचा के पास लप्सी के सिवा और कुछ नहीं है।

रात में खाना खाने के बाद चाचा ने मुझसे कहा, ''डेविड, जब तुम पैदा नहीं हुए थे तभी मैंने तुम्हारे पिता से वायदा किया था कि मैं तुमको चालीस पौंड भेंट के रूप में दूँगा, लेकिन यह रुपया मैंने आज तक तुम्हारे पास नहीं भिजवाया। आज तुम उसे ले लो। मैं अभी तुम्हें दे देता हूँ।'' उन्होंने एक छोटी-सी अलमारी से कुछ सिक्के निकाले और मेरे हाथ में चालीस पौंड गिन दिए। फिर अचानक वे अपनी छाती पर हाथ रखकर खाँसने लगे। किसी तरह कुर्सी पर बैठते-बैठते उन्होंने कहा, ''डेविड, मुझे दिल का दौरा हो आया है। तुम यह चाबी लो और ऊपर चले जाओ। सबसे आखिर वाले कमरे में दवा की एक संदूकची रखी है, उसको उठा लाओ।''

मैंने कहा, ''अभी ले आता हूँ, चाचा! लेकिन क्या कोई दीया नहीं है तुम्हारे पास! कमरे में बहुत अंधेरा होगा और पता नहीं सीढ़ी कैसी है।''

उन्होंने हाँफते हुए कहा, ''कैसा दीया? मेरे घर में दीये का क्या काम? तुम जल्दी चले जाओ, सीढ़ी वगैरह सब ठीक है।''

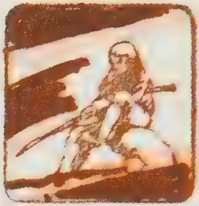
किसी तरह अंधेरे में रास्ता टटोलते हुए मैं ऊपर चला गया। रास्ते में कई जगह फूटे कनस्तरों और लकड़ी के डिब्बों से मैं टकरा गया। एक-दो जगह मुझको टक्कर भी लगी। ऊपर इतना घना अंधेरा था कि रास्ता ढूँढ़ना भी मुश्किल हो रहा था। मुझे डर भी लग रहा था। किसी तरह मैं उस कमरे में पहुँचा। कमरा बहुत

बड़ा था। लेकिन चाचा ने मुझे ठीक से रास्ता बताया था, इसलिए थोड़ी ही देर में दवाई की संदूकची मुझे मिल गई। मैं उसे लेकर नीचे लौट आया।

दवा खाकर चाचा की तबीयत कुछ शान्त हुई। किसी तरह मैं उनको सहारा देकर उनके सोने के कमरे में पहुँचा आया।

रात में अचानक जब मेरी नींद खुली, तो मैंने किसी आदमी का हाथ अपने गले पर पाया। मैं फौरन उछलकर खड़ा हो गया। कमरे में घना अंधेरा था, फिर भी मैं पहचान गया कि मेरे बिस्तर के सिरहाने चाचा खड़े हुए हैं। मैंने चीखकर कहा, "कौन हो तुम? यहाँ क्या कर रहे हो?"

चाचा ने पीछे हटते हुए कहा, "कुछ नहीं डेविड, यह तो मैं हूँ। यह देखने आया था कि तुम सो गए हो या नहीं। अच्छा सोओ, मैं जा रहा हूँ।" यह कहकर वे कमरे के बाहर निकल गए। मुझको उनके इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था और साथ ही डर भी लग रहा था। मुझे लगा कि चाचा मेरा गला घोंटना चाहते थे। लेकिन मेरी समझ में नहीं आया कि आखिर वे ऐसा क्यों चाहते हैं; और हालाँकि वे मेरे सगे चाचा हैं, फिर मुझसे इस तरह अजनबी की तरह क्यों व्यवहार कर रहे हैं। इसी उधेड़बुन में मैं काफी देर तक जागता रहा और फिर मेरी आँख लग गई।



: 3 :

सवेरे लप्सी का नाश्ता करने के बाद मैंने चाचा से साफ-साफ पूछा कि आखिर उनके इस तरह के व्यवहार का मतलब क्या है, वे इस तरह मुझको घूरते क्यों रहते हैं और रात में अंधेरे में मेरा गला क्यों दबा रहे थे।

इसके जवाब में चाचा कुछ हड़बड़ाए, लेकिन एकदम से कोई बात नहीं कह सके। इतने में अचानक दरवाज़े पर किसी के आने की आहट हुई। चाचा को वहीं बैठने का इशारा करके में खुद दरवाज़ा खोलने के लिए चला गया। दरवाज़े पर एक लड़का खड़ा था, जो चाचा के लिए कहीं से चिट्ठी लाया था। मैं उसको अपने साथ अन्दर ले आया। लड़का बड़ा मस्त था और न जाने क्या गुनगुना रहा था।

चिट्ठी पढ़कर चाचा ने मुझे दे दी और पढ़ने के लिए कहा। मैंने देखा चिट्ठी में किसी कप्तान होसीज़न ने चाचा को लिखा था कि वे ज़रूरी बातचीत के लिए बन्दरगाह पर आ जाएँ और साथ चलकर रैंकिलर नाम के वकील से बातचीत कर लें। जब चिट्ठी पढ़ चुका तो चाचा ने कहा, ''देखा तुमने! उसने मुझको बन्दरगाह पर मिलने के लिए बुलाया है। वैसे तो मैं नहीं जाता, लेकिन वकील से बात करना ज़रूरी है। चलो, तुम भी मेरे साथ चलो।''

मैं राज़ी हो गया। चाचा अपना बड़ा-सा ओवरकोट पहनकर और एक बहुत पुरानी तलवार कमर में बाँधकर चलने के लिए तैयार हो गए। रास्ते-भर वे मुझ से कुछ नहीं बोले। मैंने उस लड़के से बात करना शुरू कर दिया। उसने बताया कि उसका नाम रैन्सम है और वह नौ साल की उम्र से ही जहाज़ों पर इधर-उधर घूमता रहता है। उसने अपनी छाती खोलकर बताया कि उसने स्पेन में गोदना गुदवाया था। वह न जाने दुनिया-भर की कौन-सी बातें बताता रहा—उसने कैसे-कैसे हिम्मत के काम किए हैं और किस तरह अपने से तगड़े आदमियों से भी लड़ने में वह आज तक नहीं घबराया है, वगैरह-वगैरह। मुझे लगा कि वह लड़का मुझको देहाती समझकर मेरे आगे डींग हाँक रहा है।

लड़के ने मुझे कप्तान होसीज़न के बारे में भी बताया और उस जहाज़ के बारे में बताया जिस पर आजकल कप्तान नियुक्त था। कप्तान की उसने बड़ी तारीफ की। लेकिन फिर वह बोला, ‘‘पर भई, इस जहाज़ का छोटा कप्तान बड़ा खराब है। वैसे तो वह खूब हंसता-हंसाता रहता है, लेकिन जब उसे गुस्सा आता है तो वह मार बैठता है। इसीलिए हमारे जहाज़ के सभी नौकर-चाकर उसको चाहते हैं, लेकिन उससे नाराज़ भी बहुत रहते हैं।’’ फिर उसने आगे बताया कि उसके पिता भी इंग्लिस्तान के किसी बन्दरगाह में काम किया करते थे और हाल में ही उनकी मृत्यु हुई थी। उसने यह भी बताया कि जिस जहाज़ में वह काम करता है उसका नाम ‘कावनेंट’ है। इस जहाज़ पर उन अभागे कैदियों को भी रखा जाता था जिन्हें किसी गम्भीर अपराध के कारण उत्तरी अमेरिका में गुलामी की सज़ा मिली होती थी। इनमें कुछ ऐसे निर्दोष और नादान लोग भी रहते थे,

जिन्हें शरारत में यह बदले की भावना से पकड़ लिया जाता था और गुलामों की तरह रखा जाता था।

किनारे पर पहुँचने पर रैन्सम ने एक छोटी-सी नाव दिखाकर कहा, "देखो डेविड, यह नाव कप्तान के इन्तज़ार में यहाँ खड़ी है, और वह देखो, हमारा जहाज़ 'कावनेंट' किनारे से आधा मील दूर समुद्र में खड़ा है।"

घाट से हम लोग किनारे के गाँव में आए और 'हावेस' नाम की सराय में पहुँचे। कप्तान होसीज़न यहीं रहता था। रैन्सम हम लोगों को ज़ीने से होते हुए एक छोटे-से कमरे में ले गया। वहाँ एक कोने में चिमनी के पास टेबल पर एक लम्बा-तगड़ा और साँवला-सा आदमी चुपचाप बैठा कुछ लिख रहा था। चाचा को देखते ही वह खड़ा हो गया और हाथ मिलाकर बोला, "आइए मि. बेल्फोर, आपको बड़ी तकलीफ हुई। इधर आराम से बैठिए।"

थोड़ी देर बाद मैं उन दोनों को वहीं बैठे छोड़कर बाहर निकल आया। वे दोनों न जाने किस बात में लगे थे और ढेरों कागज़ों को उलट-पलट रहे थे। नीचे जाकर मैं सराय के मालिक से बातें करने लगा। उसने मुझ से पूछा, "क्या तुम ही एबेनेज़र के साथ आए हो?"

यह मेरे चाचा का नाम था। जब मैंने 'हाँ' कहा तो वह कहने लगा, "बड़े ताज्जुब की बात है। यह बूढ़ा बड़ा दुष्ट आदमी है, लेकिन अपनी जवानी में यह बहुत भला था। और जब खबर उड़ी कि इसने अपने भाई एलेक्ज़ेंडर की हत्या कर दी है तो इसे बड़ा सदमा पहुँचा और तब से यह एक अच्छे आदमी की बजाए दुष्ट हो गया। क्या तुम्हें यह सब कुछ मालूम नहीं है?"

जब मैंने कहा कि मुझे यह सब कुछ नहीं मालूम, तो सराय वाले ने आगे बतलाया, "अरे, यह तो बड़ा मज़ेदार किस्सा है।



तुम इस बूढ़े के साथ हो और फिर भी तुम्हें इसके बारे में कुछ नहीं मालूम! लोगों का कहना है कि इसने शा खानदान का पुराना मकान हथियाने के लिए ही अपने छोटे भाई एलेक्ज़ेंडर की हत्या की।" यह कहकर वह अपने ग्राहकों के काम में लग गया।

उसकी बात सुनकर मैं भौचक्का रह गया। अब मुझे अपने चाचा की असलियत का पता चला। मैं वहीं एक खिड़की के पास बैठकर घाट की तरफ देखने लगा। कुछ देर बाद मैंने देखा कि कप्तान ने घाट पर जाकर अपने आदमियों को कुछ समझाया और इसके बाद वह फिर से सराय में लौट आया।

तब तक मेरे चाचा भी उतरकर नीचे आ गए थे। दोनों सड़क पर खड़े होकर कुछ देर बात करते रहे। फिर चाचा ने मुझको आवाज़ दी। कप्तान ने मुझको देखकर कहा, "भाई डेविड, तुम्हारे चाचा ने मुझको तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है। तुम्हारे जैसे लड़कों से मैं हमेशा दोस्ती करना चाहता हूँ। अभी आधे घंटे की देर है। आओ चलो, मैं तुम्हें अपना जहाज़ दिखा दूँ।"

फिर मेरे साथ-साथ चलते हुए उसने धीरे-से मेरे कान में

कह दिया, "मुझे तुम से एक बात भी कहनी है। वह तुम्हारे लिए बहुत ज़रूरी है।" कुछ देर में हम लोग घाट पर पहुँच गए। कप्तान ने मुझे और चाचा को सहारा देकर नाव में बिठाया। नाव चल पड़ी। कप्तान से दोस्ती करके मुझे भी बड़ी खुशी हो रही थी। नाव में वह मज़ाक करता रहा। लेकिन चाचा न जाने क्यों गम्भीर बने बैठे रहे और रास्ते-भर किसी से नहीं बोले। कुछ ही देर में नाव जहाज़ के पास पहुँच गई।

कप्तान के हुक्म से सामान चढ़ाने की एक जालीदार थैली जहाज़ पर से नीचे लटकाई गई। मुझको उसी में बैठाकर जहाज़ पर चढ़ाया गया। फिर कप्तान भी ऊपर आ गया। जहाज़ की छत पर पहुँचकर मुझे बड़ी खुशी हुई। कप्तान मुझको जहाज़ के कल-पुर्जे दिखाने लगा। कुछ देर बाद मैंने पूछा, "लेकिन मेरे चाचा कहाँ हैं? क्या वे जहाज़ पर नहीं आए?"

इस पर कप्तान ने गम्भीरता से कहा, "तुम्हारे चाचा अपनी जगह हैं, और तुम अपनी जगह हो!"

यह सुनकर मेरे पाँव काँपने लगे। मैं दौड़कर जहाज़ की छत के किनारे पहुँच गया। मैंने देखा कि नाव जहाज़ से गाँव की तरफ लौटी जा रही थी। उसमें मेरे चाचा बैठे थे। मैं ज़ोर से चिल्लाया, "चाचा, चाचा! मुझे छोड़कर न जाओ! हाय मुझे बचाओ!"

मेरे चाचा ने मेरी तरफ देखा। उनके चेहरे पर दुष्टता और घृणा के भाव साफ नज़र आ रहे थे। उन्होंने मेरी तरफ से मुँह फेर लिया। मैं और ज़ोर से चिल्लाया लेकिन किसी के मज़बूत हाथों ने मुझ को पकड़कर जहाज़ के किनारे से अन्दर खींच लिया। फिर अचानक किसी ने मेरे सिर पर ज़ोर से चोट की। मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा गया। मैं बेहोश हो गया।



: 4 :

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने-आपको अंधेरे में पाया। सिर में अब दर्द हो रहा था। मेरे हाथ-पैर बंधे हुए थे और न जाने कैसी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। जहाज़ के चरमराने और बड़ी-बड़ी लहरों के थपेड़ों की आवाज़ के बीच जहाज़ियों की आवाज़ें भी आ रही थीं।

जिस कोठरी में मैं पड़ा था, वह जहाज़ के पेंदे में थी। घने अंधेरे के कारण यह जानना मुश्किल हो रहा था कि अभी दिन या रात। थोड़ी देर बाद फिर से मुझे नींद आ गई। जब मेरी नींद खुली तो मैंने देखा कि एक आदमी हाथ में लालटेन लिए हुए मेरा चेहरा देख रहा था। उसने मुझ से पूछा, "कहो, क्या हाल है?"

जवाब में मैं सिसक पड़ा। उस आदमी ने मेरी नाड़ी देखी और फिर मेरे सिर के घाव को धोना-पोंछना शुरू किया। घाव पर पट्टी बाँधकर उसने मुझे टीन के एक प्याले में थोड़ी-सी ब्रांडी पीने को दी। इसके बाद वह चला गया। जब दूसरी बार वह लौटकर आया तो मुझे कुछ चक्कर-सा आ रहा था। जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था और रस्सियों से बंधे हाथ-पैर जैसे कटे जा रहे थे। कोठरी की बदबू से मेरा दम घुट रहा था। इस बार

उस आदमी के साथ कप्तान भी आया था। वह आदमी लालटेन से मुझे दिखा-दिखाकर कप्तान से कह रहा था, "आप खुद ही देख लीजिए साहब, कितना तेज़ बुखार चढ़ा है इस लड़के को। इस कोठरी में न हवा आती है न रोशनी। यहाँ यह मर जाएगा।"

कप्तान बोला, "तो क्या किया जाए मि. रिआक और कोई चारा नहीं है। यह जहाँ है, वहीं रहेगा।"

मि. रिआक ने उनके कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "कप्तान, तो क्या तुम्हें इसकी हत्या के लिए भी रुपया मिला है?"

इस पर कप्तान बिगड़ खड़ा हुआ और मि. रिआक को डाँटने लगा, "चुप रहिए। यह कैसी बकवास है! आप कहते हैं कि लड़का यहाँ मर जाएगा, तो ठीक है, आप जहाँ चाहें इसको रखिए।"

कुछ देर बाद मेरे हाथ-पैर की रस्सियाँ काट दी गईं। एक आदमी कन्धे पर उठाकर मुझको जहाज़ के सबसे ऊपर वाले कमरे में ले आया। उसने मुझे कम्बलों के एक ढेर पर पटक दिया। उसने इतने ज़ोर से पटका कि मैं फिर से बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को कई आदमियों के बीच पाया, जो कमरे में बैठे गपशप कर रहे थे। एक आदमी ने मुझको कोई काढ़ा पिलाया और थोड़ी-सी शराब भी पिलाई। मेरी तबीयत पहले से काफी हल्की थी।

उस कमरे में मैं कई दिनों तक कैदी की तरह रहा। धीरे-धीरे मैं बिलकुल चंगा हो गया। इस बीच मैंने कई आदमियों से जान-पहचान भी कर ली। वे लोग बड़े रूखे स्वभाव के थे और शायद बुरे आदमी भी थे, लेकिन उनमें कई गुण थे। जब उनकी

इच्छा होती थी तो वे बहुत दयालुता का व्यवहार करते थे और कभी-कभी ईमानदारी से पेश आते थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने मेरे जो पैसे चुराकर आपस में बाँट खाए थे, वे मुझे वापस कर दिए। हालाँकि उन्होंने पूरे पैसे नहीं लौटाए, लेकिन जितने मुझे मिले, उतने से ही मैं खुश था।

मुझे पता चला कि हमारा जहाज़ उत्तरी अमेरिका के कैरोलीना नामक स्थान को जा रहा था। कहीं तुम लोग यह न समझना कि मुझे सिर्फ देश निकाला दिया जा रहा था। उन दिनों गोरे आदमियों को भी गुलामों की तरह बेचा जाता था। मेरे दुष्ट चाचा ने मुझे गुलामी के लिए ही बेचा था। मुझे अब कभी जहाज़ की छत पर नहीं जाने दिया जाता था। उस कमरे में रहते-रहते मेरा जी ऊबने लगा।

एक दिन रात में करीब ग्यारह बजे कप्तान उस कमरे में आया और मुझसे बोला, "देखो डेविड, आज तुमको जहाज़ में काम करना पड़ेगा। तुम और रैन्सम जहाज़ के गोल कमरे में बिस्तर लगाने का काम करोगे।" यह कहकर उसने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया।

जब मैं नए काम पर गोल कमरे की ओर जाने लगा तो मैंने देखा कि दो जहाज़ी रैन्सम को घसीटते हुए न जाने कहाँ ले जा रहे थे। लेकिन यह जानकर मुझे थोड़ा सन्तोष हुआ कि अब रैन्सम के साथ ही मुझको रहना है। यह गोल कमरा जहाज़ की छत पर करीब छः फुट की ऊँचाई पर बना था। इसमें सैकड़ों अलमारियाँ थीं, जिसमें जहाज़ियों का सामान और दूसरी ज़रूरी चीज़ें रखी जाती थीं। खाने की अच्छी से अच्छी चीज़ें, शराब की बोतलें और बारूद वगैरह इसी कमरे में रखी जाती थीं।

एक कोने में दीवार से सटी हुई कुछ बन्दूकें रखी थीं। दूसरी तरफ दीवार पर दजनों तलवारें लटकी हुईं थीं। कमरे में दो खिड़कियां थीं, जिनसे बाहर का दृश्य देखा जा सकता था।

जिस समय मैं कमरे में पहुँचा, वहाँ एक दीया जल रहा था और जहाज़ का छोटा कप्तान वहाँ बैठकर शराब पी रहा था। उसने न तो मेरी तरफ ही देखा और न कप्तान के सम्मान में खड़ा होना ही ज़रूरी समझा। तब तक मि. रिआक आ पहुँचे और कप्तान से कहने लगे, "हुजूर रैन्सम को शायद बहुत पीटा गया था। इसीलिए उसकी मौत हो गई।"

यह सुनकर मुझे इतना दुःख हुआ कि मैं रोने लगा। इस जहाज़ में मैं सिर्फ रैन्सम को जानता था, और वह भी अब नहीं रहा। मुझे याद आया कि उसने एक बार बताया था कि इस जहाज़ का छोटा कप्तान बहुत दुष्ट है और खूब मारपीट करता रहता है। छोटे कप्तान को देखकर मैं थर-थर काँपने लगा।

जहाज़ पर काम शुरू करने की यह मेरी पहली रात थी। थोड़ी ही देर में मैंने अपना काम समझ लिया। मेरी खैरियत अब इसमें थी कि चुपचाप बड़े और छोटे कप्तान की आज्ञा-पालन करूं। मैं खूब मेहनत से और मन लगाकर काम करने लगा। मैं अपने काम से सब लोगों को खुश करने की कोशिश करता था। मेरे काम में जहाज़ियों को खाना परोसना भी शरीक था। कप्तान प्रतिदिन निश्चित समय पर खाना खाने आता था। वह कभी भी अकेले खाना नहीं खाता था, जहाज़ के किसी न किसी बड़े कर्मचारी को हमेशा अपने साथ खाना खिलाता था। खाना खाने के बाद वह खूब शराब पीता था।

दिन में मुझे दौड़-दौड़कर जहाज़ के अधिकारियों को शराब

पिलानी पड़ती थी। इस तरह मुझे इतनी मेहनत करनी पड़ती थी कि मैं बुरी तरह थक जाता था। रात में मैं गोल कमरे में शराब के पीपों के पास लकड़ी के ठंडे फर्श पर अपना कम्बल बिछाकर पड़ जाता था। काफी ठंड होने पर भी थकावट के मारे मुझे जल्दी नींद आ जाती थी। लेकिन जहाज़ी लोग रात में मुझे आराम नहीं करने देते थे। जो जहाज़ी रात में जहाज़.की देखभाल का काम करते थे, वे दिन में काम करने वालों की बजाय ज़्यादा शराब पीते थे। वे लोग रात-भर मेरा नाम लेकर ज़ोर-ज़ोर से चीखते रहते थे और मुझे नींद से उठकर उन्हें शराब पिलानी पड़ती थी।

मैं मन मारकर सब कुछ चुपचाप सह रहा था, क्योंकि मुझे मालूम था कि रैन्सम का क्या हाल हुआ था। रैन्सम के मरने के बाद से छोटा कप्तान बहुत ज़्यादा शराब पीने लगा था और पहले से भी ज़्यादा चिड़चिड़ा हो गया था। वह ज़रा-ज़रा-सी बात पर नाराज़ हो जाता था। ज़हाज़ियों से भी अक्सर उसका झगड़ा हो जाता था और वह मारपीट कर बैठता था। गाली के बिना तो वह बात ही नहीं करता था।



: 5 :

करीब एक सप्ताह तक हमारा जहाज़ मौसम खराब होने के कारण समुद्र में इधर-उधर भटकता रहा। कभी-कभी तो लगता था कि हम लोग रास्ता भूल जाएँगे। दसवें दिन बड़ा घना कुहरा पड़ रहा था। अचानक रात में दस बजे के लगभग, जब मैं कप्तान और मि. रिआक को खाना खिला रहा था जहाज़ किसी चीज़ से टकरा गया।

बाद में पता चला कि जहाज़ एक नाव से टकराया था। नाव के दो टुकड़े हो गए थे और वह जहाज़ के पेंदे में फंस गई थी। उसके यात्रियों में से सिर्फ एक आदमी को छोड़कर और कोई नहीं बचा। उस आदमी को जहाज़ पर चढ़ा लिया गया। वह आदमी देखने में मुझको बहुत भला लगा। उसका बातचीत करने का ढंग भी बहुत अच्छा था। जब उसने अपना बरानकोट उतारा तो मैंने देखा कि उसने एक बहुत बड़ी तलवार अपनी कमर में बाँध रखी थी।

बातचीत के दौरान उसने कप्तान को बताया, ''नाव में मेरे साथ बहुत अच्छे लोग थे। वे सभी मेरे वफादार दोस्त थे। मैं फ्रांस का रहने वाला हूँ। अगर आप मुझे फ्रांस पहुँचा देंगे तो मैं आपको बहुत-सा इनाम दूँगा।''

लेकिन कप्तान इसके लिए राज़ी नहीं हुआ। इस पर उस आदमी ने अपनी जेब से एक थैली निकाली और कप्तान के आगे दो-तीन गिन्नियाँ रख दीं। उन्हें देखकर कप्तान की आँखें चमक उठीं। उस आदमी ने फिर से गिन्नियाँ अपनी थैली में रख लीं। यह थैली एक पट्टे की तरह थी, जिसे वह कमर में बाँधे रहता। वह बोला, ''अगर तुम मुझको फ्रांस के किसी भी किनारे पर उतार दोगे तो मैं तुम्हें तीस गिन्नियाँ दूँगा।''

कप्तान राज़ी हो गया। इसके बाद दोनों बातचीत करते हुए जहाज़ की छत पर टहलने लगे। असल में बात यह थी कि उस ज़माने में कई ऐसे लोग, जिन्हें देश-निकाले की सज़ा मिली होती थी, अक्सर अपने जीवन को खतरे में डालकर अपने सम्बन्धियों से मिलने के लिए चोरी से स्वदेश आया करते थे। वह आदमी भी ऐसे ही लोगों में से था; बल्कि वह तो विद्रोही और षड्यन्त्रकारी भी था। वह इंग्लैंड से भागकर फ्रांस चला गया था और वहाँ के राजा के यहाँ काम करता था।

जब मैं उसको खाना खिलाने लगा तो मेरी उससे थोड़ी-सी बातचीत हुई। उसने बताया, ''मैं जेकोबाइट दल का हूँ और कुछ दिन हुए इंग्लैंड से भागकर फ्रांस चला गया हूँ। अच्छा, देखो डेविड, इस बोतल में शराब बहुत कम है। जब मैंने तीस गिन्नी देने का वायदा किया है तो क्या मुझे यहाँ भरपेट खाने-पीने को भी नहीं मिलेगा? जाओ, एक बोलत शराब और लाओ।''

मैंने कहा, ''शराब की बोतलें जिस अलमारी में रखी हैं, उसकी चाबी कप्तान के पास है।''

''तो क्या हुआ, जाओ कप्तान से चाबी माँग लाओ।''

''अच्छा, अभी लाता हूँ।'' यह कहकर मैं कमरे के बाहर

आ गया।

बाहर डेक पर घना कुहरा छाया हुआ था। घनी काली रात थी। कुहरे के कारण तारे भी दिखाई नहीं दे रहे थे। डेक पर उस समय एक भी जहाज़ी नहीं था। जहाज़ धीरे-धीरे आगे बढ़ा जा रहा था। मैं दौड़ा-दौड़ा नीचे के डेक पर पहुँचा। वहाँ कुछ लोग अपने काम में लगे थे, कुछ सो रहे थे और चार-पाँच आदमी अंगीठी के पास बैठे ताश खेल रहे थे। एक कोने में मेज़ पर लालटेन रखकर कप्तान, मि. रिआक और दो एक और अफसर बैठे धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। वे लोग बार-बार चौंककर इधर-उधर देखते थे और फिर आपस में फुसफुसाने लगते थे। ऐसा लगता था जैसे वे लोग कोई गुप्त योजना बना रहे थे। मैं दबे पाँव उनकी तरफ बढ़ने लगा। पास जाने पर मैंने जो कुछ सुना उससे मेरे सन्देह की पुष्टि हो गई।

मैंने सुना, मि. रिआक कह रहा था, "क्या हम लोग किसी तरह बहकाकर उसे गोल कमरे के बाहर नहीं निकाल सकते? हमारे सारे हथियार गोल कमरे में ही रखे हैं। अगर उसे पता चल गया तो वह कमरे पर कब्ज़ा कर लेगा और फिर लेने के देने पड़ जाएँगे।"

"तुम निरे डरपोक हो।" कप्तान ने डाँटकर कहा, "उसको बाहर निकालने की ज़रूरत नहीं है। उसे गोल कमरे में ही रहने दो। वहाँ उसे आसानी से घेरा जा सकता है। उसे कुछ पता चले इसके पहले ही हम लोग हथियारों पर कब्ज़ा कर लेंगे।"

"लेकिन वह बहुत तगड़ा है। उस पर आसानी से काबू पाना मुश्किल है।" मि. रिआक ने दबे स्वर में कहा।

कप्तान ने मेज़ पर हाथ पटककर कहा, "इसकी तुम चिन्ता न करो। उसके पास सिर्फ एक तलवार है। पहले दो आदमी जाकर

उसके आस-पास बैठ जाएँगे और उसको बातों में लगाने की कोशिश करेंगे, फिर मौका पाकर उसके हाथ पकड़ लेंगे। या अगर यह संभव नहीं हुआ तो हम लोग कमरे के दोनों दरवाज़ों से एक साथ अन्दर घुस पड़ेंगे और उसको तलवार खींचने का मौका मिले इसके पहले ही हम उस पर हमला कर देंगे।''

यह सब सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। ये लोग उस आदमी की हत्या का षड्यन्त्र रच रहे थे। मेरा मन इन धोखेबाज़ लोगों के प्रति क्रोध और घृणा से भर गया। मेरा मन हुआ कि भागकर गोल कमरे में लौट जाऊँ, लेकिन मैंने हिम्मत और समझदारी से काम लिया।

मैंने उन लोगों के पास जाकर कहा, ''कप्तान! वह आदमी और शराब माँग रहा है। लाइए, अलमारी की चाबी दे दीजिए।''

मेरी आवाज़ सुनकर वे लोग चौंक पड़े। तभी मि. रिआक ने कुछ सोचकर कहा, ''वाह, यह बड़ा अच्छा मौका है। हम लोग अब आसानी से हथियारों पर कब्ज़ा कर सकते हैं। डेविड हमारी मदद कर सकता है। सुनो डेविड, इधर आओ। क्या तुम्हें मालूम है ना कि गोल कमरे में पिस्तौलें कहाँ रखी हुई हैं?''

''अरे, हाँ-हाँ, डेविड को सब मालूम है। डेविड बड़ा समझदार लड़का है।'' कप्तान ने बीच में ही कहा। फिर वह मेरा कन्धा थपथपाते हुए बोला, ''सुनो डेविड, गोल कमरे में वह जो आदमी ठहरा है ना, वह बड़ा खतरनाक है। वह हम सब लोगों को खतरे में डाल सकता है। इसके अलावा जानते हो, वह हमारे देश का दुश्मन है। वह राजा जार्ज का पक्का दुश्मन है। हमें उस आदमी से बचकर रहना चाहिए।''

कप्तान के स्वर में अचानक बड़ी मिठास आ गई थी। इतने

प्यार से आज तक कभी पहले उसने मुझसे बात नहीं की थी। मैं अच्छी तरह समझता था कि इसका कारण क्या है। लेकिन मैं अपने मन का भाव छिपाकर चुपचाप उसकी बात सुनता रहा।

कप्तान ने अपनी बात जारी रखी, "हाँ, तो अब समस्या यह है कि हमारे सारे हथियार उस गोल कमरे में पड़े हैं। बन्दूक, पिस्तौल, गोला-बारूद सभी कुछ वहीं रखा है। अब अगर हम में से कोई आदमी जाकर वहाँ से हथियार हटाने की कोशिश करेगा तो वह बदमाश फौरन ताड़ जाएगा और लड़ने के लिए तैयार हो जाएगा। लेकिन अगर तुम हमारी मदद करो तो काम बन सकता है। तुम्हारी हरकतों पर वह ज़्यादा ध्यान भी नहीं देगा। तुम जाकर दो-तीन पिस्तौलें और कुछ गोलियां और बारूद का एक बटुआ उठा लाओ। तुम्हें यह काम बड़ी होशियारी से करना है। अगर तुम यह काम कर दोगे तो कैरीलीना पहुँचने पर मैं तुम्हारी बड़ी मदद करूँगा और किसी अच्छी जगह तुम्हें काम दिला दूँगा और फिर कुछ दिनों बाद तुम्हें वापस अपने देश पहुँचा दूँगा।"

इसी बीच मि. रिआक ने कप्तान के कान में कुछ कहा। कप्तान बोला, "हाँ-हाँ, बिलकुल ठीक। मुझे मंजूर है।" फिर मेरी ओर मुड़कर बोला, "और देखो डेविड, उस बदमाश आदमी के पास सोने की बहुत-सी मोहरें हैं। मैं वादा करता हूँ कि जब उसकी रकम हमारे कब्ज़े में आ जाएगी, तो उसमें से तुमको भी कुछ हिस्सा दिया जाएगा।"

मैंने कहा, "ठीक है, कप्तान साहब! आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूँगा। लेकिन मुझे अलमारी की चाबी तो दीजिए। मैं जाकर उसके लिए एक बोतल शराब की निकाल दूँगा और जब वह पीने लगेगा तब मैं चाबी लौटाने के बहाने पिस्तौलें लेकर आपके

पास चला आऊंगा।"

"शाबाश! सचमुच तुम बड़े समझदार लड़के हो।" कप्तान ने मेरी पीठ ठोंकी और चाबी का गुच्छा मुझे सौंप दिया। मैं वहाँ से धीरे-धीरे गोल कमरे की ओर लौटा।

रास्ते में मैंने सोच लिया कि मुझे क्या करना चाहिए। यह जहाज़ तो ठगों और हत्यारों से भरा हुआ है। इन लोगों ने मुझको धोखे से भगाया है। बेचारे रैन्सम की हत्या कर डाली है और ये लोग थोड़े-से धन के लिए एक आदमी की हत्या करने पर उतारू हैं। क्या मुझे ऐसे लोगों की मदद करनी चाहिए? हर्गिज़ नहीं। लेकिन दूसरी तरफ मेरी भी जान जाने का खतरा है। उस आदमी के साथ-साथ ये लोग मेरी भी हत्या कर सकते हैं। हम दो आदमी मिलकर इतने सारे जहाज़ियों का मुकाबला कैसे कर सकते हैं?

इसी तरह सोच-विचार करते हुए मैं गोल कमरे में पहुँचा वह आदमी आराम से बैठा धीरे-धीरे खाना खा रहा था। उसे यह पता नहीं था कि वह मौत के मुँह में आ फँसा है और थोड़ी ही देर में धोखेबाज़ कप्तान अपने खूँखार साथियों के साथ उसकी गर्दन पर सवार हो जाएगा। मैं फौरन एक निश्चय पर पहुँच गया। अब देर करने का मौका नहीं था। मैं तुरन्त उसकी मेज़ के पास जा पहुँचा और उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला, "क्या तुम अपनी जान देना चाहते हो?"

मेरा प्रश्न सुनकर वह एकदम उछलकर खड़ा हो गया। मैंने कहा, "इस जहाज़ में हत्यारे और गुण्डे भरे हुए हैं। उन्होंने एक बच्चे की हत्या कर डाली है और अब तुम्हारी बारी है।"

उस आदमी ने आश्चर्य से मेरी ओर देखते हुए कहा, "अच्छा ऐसी बात है! मैं भी उन लोगों को देख लूँगा। इस काम में तुम

मेरा साथ देना। दोगे ना? तुम्हारा नाम क्या है?"

मैंने उसको अपना नाम और पता बताया तथा संक्षेप में अब तक का सारा किस्सा सुना दिया। उसने बताया कि मेरा नाम ऐलेन ब्रेक है।

अब हम दोनों एक-दूसरे के दोस्त थे। हमने मिलकर अपनी रक्षा के बारे में सोचना शुरू किया। ऐलेन ने उस कमरे की मोर्चे बन्दी इस तरह की जैसे वह कोई छोटा-मोटा किला हो। उसने छत की तरफ के एक दरवाज़े को छोड़कर बाकी सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द कर दीं। उसने कहा, "देखो डेविड, हम लोगों को ज़रा हिम्मत से काम लेना चाहिए। तुम ये गोलियाँ और बारूद और दो पिस्तौलें लेकर इस टेबल पर चढ़ जाओ। तुम्हारा काम होगा पीछे वाले दरवाज़े की हिफाज़त करना। अगर कोई आदमी दरवाज़ा या खिड़की खोलने की कोशिश करे तो उस पर गोली चला देना। मैं तलवार लेकर खड़ा हूँ और इधर से आने वाले का मुकाबला करूँगा।"

हम लोगों को ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। जब मैं कप्तान के लिए पिस्तौलें लेकर बाहर नहीं गया और काफी देर हो गई तो वे लोग कुछ घबराए। कप्तान मुझको आवाज़ देता हुआ कमरे के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। जैसे ही उसने अन्दर पैर रखा कि ऐलेन ने तलवार निकालकर कहा, "खबरदार! वहीं खड़े रहो। अन्दर घुसने की कोशिश न करना। मेरी यह तलवार तुम्हारे जैसे कई कुत्तों को मौत के घाट उतार चुकी है।"

कप्तान फौरन समझ गया कि मामला क्या है। उसने अपने साथियों को आवाज़ दी और कड़ककर कहा, "धोखेबाज़ कहीं के! हमने तो तुमको डूबने से बचाया और तुम यह बदला चुका

रहे हो! हम सब मिलकर अभी तुम्हारी बोटी-बोटी काट डालेंगे।" यह कहकर कप्तान ने मेरी तरफ भी घृणापूर्वक देखा और फिर वह वहाँ से चला गया।

थोड़ी ही देर बाद वह अपने साथियों को लेकर आ पहुँचा। उन्होंने कमरे को घेर लिया। मैं अपने मोर्चे पर डटा हुआ था। मैंने देखा कि छोटा कप्तान तलवार लेकर दरवाज़े पर खड़ा है। मैंने ऐलेन से कहा, "यही वह आदमी है। इसी ने उस लड़के की जान ली है।"

ऐलेन बोला, "ठीक है, तुम ज़रा खिड़कियों का ख्याल रखो, मैं इन लोगों से निपट लूँगा।" यह कहकर वह छोटे कप्तान से भिड़ गया। देखते-देखते छोटा कप्तान वहीं ढेर हो गया। उसके साथियों ने उसके छटपटाते हुए शरीर को दरवाज़े से बाहर खींच लिया।

तब तक कुछ लोग लोहे की छड़ें लेकर उस दरवाज़े को पीटने लगे जहाँ मैं पिस्तौल लिए खड़ा था। मैंने इसके पहले कभी पिस्तौल नहीं चलाई थी, लेकिन फिर भी मैंने निशाना साधकर गोली चला दी। एक आदमी वहीं ढेर हो गया। जहाज़ियों में भगदड़ मच गई। तभी मैंने दूसरी गोली चलाई। इस बार दूसरा आदमी घायल हो गया और बाकी लोग वहाँ से भाग खड़े हुए। मैंने फिर से अपनी पिस्तौल भर ली।

उधर ऐलेन ने भी दो आदमियों को घायल कर दिया था। अब जहाज़ी कमरे से दूर हटकर आपस में कुछ बहस करने लगे। तब तक एक आदमी चुपके से तलवार लेकर अन्दर कूद आया। वह मुझ पर वार करने ही जा रहा था कि मैंने उसके सीने में गोली मार दी। वह बुरी तरह घायल होकर ज़मीन पर छटपटाने लगा

और थोड़ी ही देर में मर गया।

ऐलेन ने भी तीन-चार आदमियों को मार गिराया। एक बार तो हम लोगों को लगा कि हम हार जाएँगे, क्योंकि कमरे में एक साथ कई आदमी तलवारें लेकर घुस पड़े थे। लेकिन ऐलेन ने सबको मार भगाया। थोड़ी ही देर में हमारे शत्रु भाग निकले। अब न सिर्फ कमरे पर बल्कि सारे जहाज़ की छत पर भी हमारा अधिकार था। जैसे ही कोई आदमी छत पर आने की कोशिश करता, मैं खिड़की में से गोली चला देता। अन्त में कप्तान ने अपने सभी आदमियों को नीचे बुला लिया।

अब तक मैं बिलकुल नहीं घबराया था, लेकिन इतने सारे आदमियों को मरा देखकर मुझे न जाने कैसा लगने लगा और रोना आ गया। ऐलेन ने मेरा कंधा थपथपाते हुए कहा, "डेविड तुमने मेरी बड़ी मदद की है। तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं कर सकता था। अब तुम बहुत थक गए हो, आराम से सो जाओ। मैं अकेले ही तीन-चार घंटे तक पहरा दूँगा। उसके बाद तुम पहरा देना और मैं थोड़ा आराम कर लूँगा।"

इसके बाद ऐलेन ने कमरे की सफाई की और मरे हुए लोगों को उठाकर समुद्र में फेंक दिया। मैं ज़मीन पर ही लेट गया। थोड़ी देर में मुझे नींद आ गई। चार घण्टे बाद उसने मुझे जगाया। मैं दो भरी हुई पिस्तौलें लेकर दरवाज़े पर खड़ा हो गया और ऐलेन आराम करने लगा। सवेरा होने पर मैंने देखा कि जहाज़ ज़मीन के पास पहुँच रहा है। बाद में पता चला कि हमारा जहाज़ भटककर रम नाम के एक द्वीप के पास आ पहुँचा था।





: 6 :

कुछ देर बाद ऐलेन भी उठ आया। हम दोनों ने बैठकर भर पेट नाश्ता किया। इस बीच किसी भी जहाज़ी ने ऊपर आने की हिम्मत नहीं की। खाना खाते समय ऐलेन ने अपने कोट के चाँदी के बटनों में से एक बटन काटकर मुझको दिया और कहा, "लो डेविड, इसको रख लो। यह तुम्हारे काम आएगा। कहीं भी जाओगे और इस बटन को दिखाओगे तो मेरे मित्र तुम्हारी सहायता के लिए आ पहुँचेंगे।"

हम लोग इसी तरह बातें कर रहे थे कि अचानक छत के कोने से मि. रिआक ने आवाज़ दी। वह समझौता करना चाहता था। उसने कहा, "डेविड, ज़रा अपने दोस्त को खिड़की के पास बुलाओ। कप्तान साहब उससे बात करना चाहते हैं।"

ऐलेन दरवाज़े पर खड़ा होकर कप्तान से बात करने लगा। कप्तान ने कहा, "देखो भाई, इस तरह तो हम सब बर्बाद हो जाएँगे और जहाज़ भी न जाने कहाँ भटक जाएगा। तुमने मेरे छोटे कप्तान को मार डाला है। असल में वही जहाज़ चलाया करता था और वही सारे रास्ते जानता था। इस हालत में मैं तुमको फ्रांस की ज़मीन पर नहीं उतार सकूँगा। मुझको ग्लासगो में ही रुक जाना पड़ेगा।"

ऐलेन ने उसको डाँटकर कहा, "यह सब मैं कुछ नहीं जानता। तुम्हें अपना वादा पूरा करना पड़ेगा। तुम मुझे फ्रांस में कहीं भी छोड़ सकते हो। अच्छा सुनो, मैंने सुना है कि तुम लोगों के पास शराब अब नहीं रह गई है। मैं तुमको दो बाल्टी पानी के बदले एक बोतल ब्रांडी दे सकता हूँ।" इस तरह दोनों में कुछ हद तक सन्धि हो गई। कप्तान के आदमी दो बाल्टी पानी ले आए, जिससे हम लोगों ने कमरे के फर्श पर से खून के धब्बों को धो डाला।

हल्की-हल्की हवा चलने लगी थी और जहाज़ धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा था। हम दोनों बैठकर बात करने लगे। पहले मैंने उसको अपनी कहानी सुनाई, उसके बाद ऐलेन अपना किस्सा सुनाने लगा। उसने बताया कि वह अंग्रेज़ी पल्टन से भाग निकला था। असल में वह एक छोटी जाति का सरदार था और उन लोगों ने सन् 1688 की क्रान्ति में भाग लिया था। उस क्रान्ति में वे लोग हार गए थे और उनके दल के लोग तितर-बितर हो गए। उसके साथी अब भी उसको बहुत मानते थे और रुपये-पैसे से उसकी मदद करते रहते थे।

ऐलेन ने आगे बताया कि उसकी जाति के लोग राजा को रुपया अदा करने के अलावा उसको भी बराबर रुपया देते रहते थे। कई लोगों से उसकी दुश्मनी है। उनमें से 'रेड फाक्स' के नाम से बदनाम एक आदमी राजा जार्ज का एजेण्ट है और मेरी ऐलन की पुरानी ज़मींदारी में बड़ा अत्याचार करता है। वह एपिन के निवासियों से झूठ-मूठ जुर्माने वसूलता रहता था।

हालांकि मैं अपने को 'विग', यानी राजा जार्ज का समर्थक कहता था। लेकिन उस विद्रोही आदमी ने जिस तरह अपनी

कहानी बताई उससे मुझको उसके साथ सहानुभूति हो गई। मुझे लगा कि उसके साथ और उसके सबसे बड़े सरदार के साथ तथा उसके अन्य साथियों के साथ अन्याय हुआ है।

अन्त में उसकी सारी कहानी सुनकर मैंने उससे कहा, "तुम जिस तरह 'रेड फाक्स' नाम के आदमी के बारे में सोचते हो, वह कुछ ठीक नहीं मालूम होता, क्योंकि वह तो राजा के हुक्म पर काम करता होगा। तुम्हें उससे झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

वह मेरा मज़ाक उड़ाते हुए बोला, "यह सब तुम्हारी समझ के बाहर की बात है। यहाँ तुम्हारी समझ से काम नहीं चलेगा। वह आदमी बड़ा दुष्ट है और उससे बदला किए बिना मैं चैन से नहीं बैठूँगा।"

तब तक कप्तान ने दरवाज़े के पास आकर कहा, "ऐलेन, अंधेरा बढ़ता जा रहा है और रास्ता हमारी समझ में नहीं आ रहा है। अगर तुम्हें रास्ता मालूम हो और तुम जहाज़ चला सकते हो तो जाओ, ज़रा कोशिश करो।"

"कहीं तुम मुझे धोखा तो नहीं देना चाहते हो? वरना याद रखो, अबकी तुम्हारी बारी है। मैं तुम लोगों में से एक-एक से निपट सकता हूँ।" ऐलेन ने कहा।

लेकिन कप्तान और उसके साथियों के चहरे से लगता था कि वे लोग सचमुच बहुत परेशान थे और जहाज़ उनके काबू में नहीं था। ऐलेन ने उनकी मदद करने का निश्चय किया। मैं भी उसके साथ-साथ बाहर आ गया। बाहर आकर हम लोगों ने देखा कि जहाज़ न जाने किस चट्टानी किनारे के पास भटक आया था। आगे दो बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच से होकर गुज़रना था। यह एक वहुत ही मुश्किल काम था, इसमें जहाज़ के चट्टान



से टकराकर टूट जाने का भय था।

जहाज़ को धीरे-धीरे आगे बढ़ाया गया। लेकिन अचानक बड़ी तेज़ हवा चलने लगी और जहाज़ की पाल उलट गई। देखते-देखते जहाज़ गेंद की तरह चक्कर खाकर धमाक से एक बड़ी-सी चट्टान से जा टकराया। इस धक्के से हम लोग जहाज़ की छत पर मुँह के बल आ गिरे। यह चट्टानी किनारा कौन-सा है, इसके बारे में हम लोग भी तय नहीं कर सके। कुछ जहाज़ियों का कहना था कि यह इंग्लैंड का सबसे दक्षिणी किनारा है, जहाँ काले पत्थरों की एक पहाड़ी समुद्र में चली गई है।

जहाज़ उस समय चट्टानों के बीच फंस गया था। सब लोग मिलकर जहाज़ को निकालने की कोशिश करने लगे। कप्तान तो बुरी तरह घबरा गया था। उसकी समझ में नहीं आ रहा

था कि क्या किया जाए। वह उस जहाज़ को अपने बच्चे की तरह प्यार करता था। उसे डर था कि कहीं जहाज़ टूट न जाए। हवा के झोंकों और समुद्री लहरों के थपेड़ों से जहाज़ बार-बार चट्टान से टकरा रहा था।

हम लोगों ने जहाज़ को छोड़ देने का निश्चय किया, क्योंकि अब वह किसी भी क्षण टूट सकता था। जहाज़ से समुद्र में नावें उतारी जाने लगीं। जैसे ही मैं ऐलेन और कुछ घायल जहाज़ियों के साथ एक नाव में उतरने जा रहा था कि जहाज़ को एक बहुत बड़ी लहर ने धक्का दिया और देखते-देखते वह उलट गया। इस धक्के को मैं सम्भाल नहीं सका और समुद्र में जा गिरा।



: 7 :

मुझको तैरना नहीं आता था। इसलिए मैं बार-बार पानी में डूबने और उतरने लगा। बहुत ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थीं। इसलिए कभी तो मैं चट्टान के पास होता और कभी वहाँ से एक फर्लांग दूर छिटक जाता था। थोड़ी ही देर में मैं बहुत-सा पानी पी गया। मैं डूबने ही वाला था कि अचानक जहाज़ से टूट कर गिरा हुआ एक बड़ा-सा लट्ठा बहते हुए उधर से आ निकला और मैं उसी के सहारे तैरने लगा।

कुछ देर में मैं जहाज़ से बहुत दूर निकल आया। बहते-बहते मैं किनारे के पास आ गया और फिर लट्ठे को पानी में छोड़कर किनारे पर चढ़ आया। मैं बुरी तरह थक गया था और मेरे पैर काँप रहे थे।

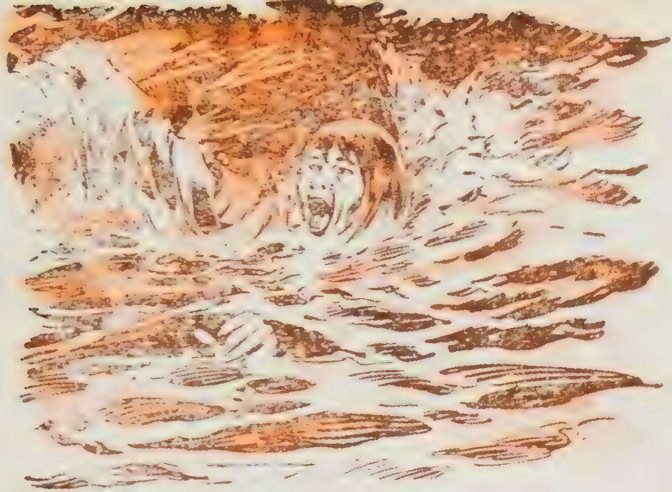
इस समय किनारे पर मैं बिलकुल अकेला था। रात का घना अंधेरा चारों तरफ छाया हुआ था। मैंने ऐलेन को और कप्तान को कई आवाज़ें दीं, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। पता नहीं वे लोग जीवित बचे थे या नहीं। कम से कम उस किनारे पर तो अभी तक कोई जहाज़ नहीं आया था। मैंने धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया। कुछ ही देर में मैं एक बड़े से टीले पर जा पहुँचा। वहीं बैठकर मैंने रात बिताई।

जब सवेरा हुआ तो मैंने चारों तरफ नज़र दौड़ाई। समुद्र में कहीं दूर तक भी मेरे जहाज़ का कोई निशान नज़र नहीं आ रहा था। मैंने खूब ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाना शुरू किया। लेकिन मेरी आवाज़ खाली चट्टानों ही से टकराकर लौट आती थी। मेरा जवाब किसी ने नहीं दिया। अन्त में जिधर से सूरज निकल रहा था उधर ही पूर्व दिशा की ओर मैंने चलना शुरू किया।

कुछ दूर जाने पर अचानक मेरा रास्ता रुक गया, क्योंकि वहाँ आगे फिर समुद्र आ गया था, जो चट्टान से घिरा होने के कारण खाड़ी की तरह लग रहा था। उस पार जाने का कोई रास्ता न देखकर मैं किनारे-किनारे चलने लगा। अभी तक मेरे कपड़े भीगे हुए थे। सूरज अभी पूरी तरह ऊपर उठ नहीं पाया था। इसी बीच आसमान में बादल छाने लगे और कुछ ही देर में पानी बरसने लगा। आसपास कहीं कोई पेड़ नहीं था। मैं भीगते हुए ही आगे बढ़ने लगा।

मेरी जेब में चाचा के दिए हुए कुछ रुपये और ऐलेन का चांदी का बटन था। इसके सिवा मैं बिलकुल खाली हाथ था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं कहाँ आ पड़ा हूँ और अब आगे क्या होने वाला है। अन्त में मैं एक तिरछी उठी हुई चट्टान की छाया में जा बैठा और किसी तरह भीगने से बच गया।

पानी बीच-बीच में थोड़ी देर के लिए रुक जाता था और फिर बरसने लगता था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि निर्जन टापू पर कहाँ जाऊँ और क्या करूँ। मुझे बार-बार कंपकंपी छूट रही थी। पानी में भीगने के कारण मुझे जुकाम हो गया। मेरे कपड़े भी अभी तक गीले थे। इधर-उधर भटकने के बाद मैं एक ऐसी चट्टान के किनारे पहुँचा जहाँ मुझे लगा कि यहाँ पानी ज्यादा



गहरा नहीं है, क्योंकि पानी में बीच-बीच में चट्टानें निकली हुई थीं। मैं हिम्मत करके पानी में उतर गया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

वहाँ से दूसरा किनारा ज़्यादा दूर नहीं था। लेकिन मैं कुछ दूर आगे बढ़ पाया था कि अचानक पानी में गोते लगाने लगा। अब आगे पानी बहुत ज़्यादा गहरा था। इसी बीच एक लहर आई और उसने मुझे उछालकर फिर से चट्टान पर ला पटका, वरना मैं उस दिन वहीं डूब जाता।

वापस किनारे पर आकर मैं गिरता-पड़ता दूसरी तरफ बढ़ा। मेरा सिर चक्कर खा रहा था और पैर लड़खड़ा रहे थे। कुछ दूर आगे जाने पर बालू वाला किनारा मिला। मैंने एक बार फिर हिम्मत की और पानी में आगे बढ़ना शुरू किया।

मैं काफी दूर तक आगे बढ़ गया। वहाँ से दूसरा किनारा बहुत पास नज़र आता था। लेकिन अभी मेरे दुर्भाग्य का अन्त नहीं हुआ था। धीरे-धीरे पानी की गहराई बढ़ने लगी और पानी मेरे गले तक आ लगा। गहराई बराबर बढ़ती जाती थी, इसलिए

अब आगे बढ़ना बेकार था। वहाँ से दूसरा किनारा थोड़ी ही दूर रह जाता था। यह सोचकर कि शायद कोई मेरी मदद के लिए आ जाए, मैंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू किया। लेकिन आवाज़ चट्टानों से टकराकर वापस लौट आई। कोई मेरी मदद के लिए नहीं आया। मैं निराश होकर वापस किनारे पर लौट आया।

किनारे पर आकर मैं बालू पर गिर पड़ा और अपनी इस असफलता पर फूट-फूटकर रोने लगा। लेकिन वहाँ कौन मेरे आँसू पोंछने वाला था! काफी देर तक मैं अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाता रहा।

इस टापू पर मैंने जितना समय बिताया वह मेरे जीवन का सबसे भयानक समय था। आज भी उस समय की याद करके मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसी मुसीबत अब तक शायद ही किसी पर पड़ी हो। मैंने इस तरह की कुछ कहानियाँ पढ़ी थीं, जिनमें जहाज़ डूबने से लोग किसी अनजान टापू में अकेले जा पड़े थे और वहाँ उन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े थे। लेकिन जैसा कि राबिन्सन क्रूसो के साथ हुआ था, या तो इन लोगों की जेब में चाकू-छुरी और कुछ औज़ार वगैरह होते थे, या औज़ारों की कोई पिटारी बहकर टापू में पहुँच जाती थी। और यहाँ मैं बिलकुल खाली हाथ था। मेरी जेब में कुछ रुपये और ऐलेन के चाँदी के बटन के अलावा और कुछ नहीं था। इसके अलावा मैं देहात का रहने वाला था और इससे पहले कभी भी मैंने जहाज़ में यात्रा नहीं की थी और न किसी जहाज़ी से बातचीत करने का मौका ही मुझे मिला था। इसलिए न तो मुझे समुद्र के बारे में कुछ पता था और न समुद्री जीवन के बारे में।

हाँ, इतना मुझे ज़रूर मालूम था कि समुद्र के किनारे की



चट्टानों के पास मिलनेवाली मछलियों को खाया जा सकता है। मैंने दूसरे दिन बड़ी मुश्किल से दो मछलियों को पकड़ा और उन्हें कच्चा ही खाकर अपनी भूख मिटाई। उस उजाड़ टापू पर न तो कोई नदी थी और न कोई झरना था। पेड़-पौधों का तो नाम तक नहीं था। एक गड्ढे में थोड़ा बरसाती पानी जमा हो गया था। उसी को पीकर मैंने अपनी प्यास बुझाई।

भूख के मारे मैं मछलियों को खा तो गया, लेकिन बाद में मुझे कुछ मतली-सी आने लगी और फिर कै हो गई। मुझे चक्कर आने लगे। काफी देर तक मेरी तबीयत खराब रही और मैं वहीं पड़ा रहा।

दूसरे दिन मेरी तबीयत कुछ ठीक हुई और मैं टापू का चक्कर लगाने के लिए निकला। पूरा टापू उजाड़ और चट्टानी था। वहाँ कोई जीवित प्राणी नहीं था। कुछ शिकारी चिड़ियाँ ज़रूर दिखाई दे जाती थीं, लेकिन उनको मारने या पकड़ने का मेरे पास कोई साधन नहीं था। काफी दूर आगे चलने पर एक ऊँचे टीले पर चढ़कर मैंने आसपास का दृश्य देखा। सामने दूसरे किनारे पर कुछ दूर पर खेत नज़र आते थे। वह रोस का किनारा था। मैंने अब इसी टीले के आसपास रहने का निश्चय किया।

इस टीले पर एक गुफा जैसी जगह भी थी, जिसके सामने एक छप्पर-सा लगा हुआ था। हो सकता है वहाँ कभी कोई रहता हो, या हो सकता है कि इस टापू पर मछली पकड़ने के सिलसिले में कभी-कभी आने वाले मछुआरों ने यहाँ अपने लिए आराम की जगह बनाई हो।

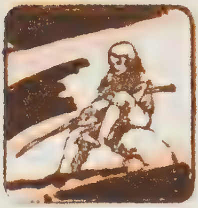
इसके अलावा इस टीले में एक और विशेषता थी। इसके ऊपर से दूसरे किनारे का वह हिस्सा दिखाई देता था जहाँ एक

बस्ती बसी हुई थी। वहां से कुछ घरों के छप्पर और एक पुराना गिरजाघर दिखाई देता था। ये मकान किनारे से बहुत दूर थे, लेकिन सुबह-शाम उनसे धुआँ निकलकर चक्कर खाता हुआ ऊपर आसमान में उठता था और मुझे अपने गाँव की याद दिलाता था।

जब अकेलेपन के कारण मेरा मन ऊब जाता था तो मैं इसी टीले पर चढ़ जाता था और सामने की बस्ती के घरों से निकलनेवाले धुएँ को देखता रहता था। इससे मेरा जी कुछ हल्का हो जाता था और मुझे कुछ हिम्मत बँधती थी। मैं सोचता था कि ईश्वर ज़रूर मेरी मदद करेगा और इस कैदखाने से मुझे छुड़ाएगा।

दो दिन बाद सवेरे जब मैं समुद्र के किनारे एक चट्टान पर बैठा आँसू बहा रहा था तो अचानक कुछ दूरी पर मुझे एक छोटी सी नाव दिखाई दी। मैंने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर आवाज देना शुरू किया। उस नाव में दो मछुआरे बैठे थे। वे लोग मेरी चट्टान के पास अपनी नाव ले आए। जब मैंने उनसे उस पार पहुँचा देने की प्रार्थना की तो उनमें से एक मछुआरे ने कहा, "भाई, इस किनारे पर नाव लगाना बहुत मुश्किल है। चट्टानें ऐसी कटी हुई हैं कि तुम नीचे नहीं उतर सकोगे। तुम बाएँ किनारे पर चले आओ। अभी ज्वार उतर गया है और समुद्र का पानी काफी घट गया है। तुम चाहो तो पैदल ही उस पार पहुँच सकते हो।

यह सुनकर मैं फौरन दौड़ने लगा। थोड़ी ही देर में बाएँ किनारे पर जा पहुँचा। जब मैं समुद्र में उतरा तो मेरे आश्चर्य और खुशी की सीमा नहीं रही। सचमुच पानी बहुत घट गया था। सिर्फ घुटने तक पानी था। मैं दौड़ता हुआ उस पार जा पहुँचा।



: 8 :

उस पार पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि इंग्लैंड का यह हिस्सा रोस के किनारे के नाम से जाना जाता है। चलते-चलते मैं एक झोंपड़े के पास पहुँचा। वहाँ एक बूढ़ा धूप में बैठा पाइप पी रहा था। जब मैंने उससे पूछा कि क्या उस जहाज़-दुर्घटना में से कोई आदमी बचकर किनारे लगा था, तो वह बोला, "हाँ बेटा, उसमें से लगभग सभी आदमी बच गए। सिर्फ एक लड़के का पता नहीं चला। उसके बारे में एक फ्रांसीसी सरदार इस गाँव में एक सन्देशा छोड़ गया है। उसने मुझे बताया है कि लड़के के पास एक चाँदी का बटन है। बटन देखकर मुझे उसको आगे का रास्ता बता देना है।"

मैं तो मारे खुशी के उछल पड़ा। यह तो मुँहमाँगी मुराद मिल रही थी। मैंने फौरन अपनी जेब से निकालकर चाँदी का वह बटन बुड्ढे के हाथ पर रख दिया, जिसे मुझे ऐलेन ने दिया था। बुड्ढे ने फौरन मुझको अपने घर में जगह दी और खाने-पीने की व्यवस्था कर दी।

उसकी स्त्री ने मेरी बड़ी सेवा की। उन लोगों ने मेरे कपड़े बदले। मुझको अच्छा खाना खिलाया और थोड़ी-सी ब्राण्डी पीने को दी। खा-पीकर मैं सो गया। मैं इतने दिनों का भूखा-प्यासा

और थका हुआ था, इसलिए आराम मिलने पर जो सोया तो दूसरे दिन दोपहर में उठा।

दूसरे दिन खा-पीकर मैंने आगे की यात्रा की तैयारी की। बुड्ढे ने मुझको चुपके से बताया, "ऐलेन बेकर का नाम किसी के सामने मत लेना। उसे विद्रोही घोषित कर दिया गया है। पुलिस उसके पीछे पड़ी हुई है और उसे गिरफ्तार करना चाहती है। असल में वह हमारे सरदार का खास आदमी है और यह इलाका उसी जागीर में पड़ता है। लेकिन सरदार ने उसकी जागीर ज़ब्त कर ली है। वह अंग्रेज ही है, लेकिन अब फ्रांसीसियों की तरह कपड़े पहनता है और हम लोग भी उसके बारे में किसी अनजान आदमी से बात करते समय उसे फ्रांसीसी ही बताते हैं। इस समय वह यहाँ से पचास साठ मील दूर एक गांव में गया है। उस गाँव के लोगों को सरकारी तहसीलदार बहुत तंग करता है। ऐलेन वहाँ इसी की रोकथाम की कोशिश करेगा।"

बूढ़े के बताए हुए रास्ते के अनुसार मैंने अपनी यात्रा आरम्भ की। दो दिन बाद मैं उस गाँव में पहुँचने वाला था। मुझे पैदल ही चलना था, क्योंकि मेरे सारे पैसे खो गए थे। मेरी जेब में इस समय सिर्फ दो गिन्नियाँ बची थीं, जिन्हें मैं आगे के लिए बचाए रखना चाहता था। जिस गाँव में मुझे पहुँचना था उसका नाम ओचर्न था। जब मैं थक जाता था तो कहीं पड़कर सो जाता था या बैठकर सुस्ता लेता था और फिर उठकर चलने लगता था। बीच में सिर्फ दो घर ऐसे पड़े जहाँ ऐलेन मेरे ठहरने का इन्तज़ाम करता गया था। इन घरों में मुझे अच्छा खाना मिला। इस तरह चलते-चलते मैं ओचर्न के पास वाले जंगल में जा पहुँचा।

यह जंगल काफी घना था और ऊँची-नीची पहाड़ियों पर

छाया हुआ था। एक जगह रास्ता बहुत ही संकरा हो गया था। कुछ दूर चलने पर मैंने देखा कि कुछ सिपाही बन्दूकें और भाले लिए चले आ रहे थे। मैं घबराकर एक पेड़ की ओट में छिप गया।

जब सिपाही चले गए तो मैं फिर निकलकर आगे बढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद चार सरकारी अफसर अपने घोड़ों की लगाम थामे, पैदल चलते हुए उधर से निकले, क्योंकि वह रास्ता ऐसा नहीं था कि घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा जा सके। सबसे आगे जो अफसर चल रहा था उसने मुझको रोका और पूछा, ''क्यों लड़के, तू यहाँ क्या कर रहा है? तू तो कोई परदेशी मालूम होता है। कहाँ जाना चाहता है?''

जब मैंने बताया कि मैं ओचर्न में एक आदमी के यहाँ जा रहा हूँ तो उसका माथा ठनका और उसने भौहें सिकोड़कर कहा, ''क्यों, वहाँ तुम्हें क्या काम है? वह गाँव तो सिपाहियों से घिरा हुआ है और मैं वहाँ जुर्माना वसूल करने जा रहा हूँ।''

अब मुझे पता चला कि मैं उसी अत्याचारी तहसीलदार के सामने खड़ा था, जो ऐलेन बेकर का दुश्मन था और उसके गाँव के लोगों को तंग करने में लगा हुआ था। मैं वहाँ से किसी बहाने भाग निकलने का उपाय सोचने लगा इतने में तहसीलदार के साथ के एक आदमी ने कहा, ''हुजूर, मुझे इस लड़के पर शक हो रहा है। शायद ऐलेन का कोई खुफिया मालूम होता है।'' यह कहकर उसने जैसे ही मुझे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया कि अचानक पेड़ों के पीछे से न जाने कहाँ से एक गोली सनसनाती हुई आई और तहसीलदार की छाती में घुस गई। तहसीलदार ज़मीन पर गिरकर छटपटाने लगा। उसके साथियों में भगदड़ मच



गई। कुछ लोग सिपाहियों को आवाज़ देने लगे और कुछ इधर-उधर हत्यारे की तलाश में दौड़ने लगे।

मौका पाकर मैं भी वहाँ से भाग निकला और घने पेड़ों से ढकी हुई एक पहाड़ी पर चढ़ गया। अचानक मैंने देखा कि एक आदमी काला लबादा ओढ़े और हाथ में बन्दूक लिए पेड़ों के बीच से होकर भागा जा रहा था। मैं फौरन ताड़ गया कि इसी आदमी ने तहसीलदार पर गोली चलाई है। मैं उसका पीछा करने लगा। लेकिन तभी एक झाड़ी के पीछे से किसी ने मुझे पुकारा, "डेविड! उधर न जाओ!"

जैसे ही मैंने घूमकर देखा तो मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। झाड़ी के पास ही ऐलेन हाथ में एक लाठी लिए खड़ा था। जब मैं पास पहुँचा तो वह बोला, "डेविड आओ, जल्दी से यहाँ से भाग चलो! मेरे मना करने पर भी मेरे एक साथी ने गोली चलाकर तहसीलदार को मार डाला है। सिपाहियों को यही शक होगा कि मैंने यह हत्या की है। वैसे ही वे लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं और अब तो मेरी जान ही ले लेंगे। वे तुमको

भी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि उनको शक हो गया होगा कि मेरे ही कहने से तुमने तहसीलदार को रास्ते में रोक रखा था।"

मैं इस घटना से बुरी तरह घबरा गया था। लेकिन ऐलेन से मिलकर बहुत खुश भी था। अब मुझे किसी बात की चिन्ता नहीं थी। मैं ऐलेन के साथ-साथ भागने लगा। रास्ते में ऐलेन बोला, "डेविड, तुमसे फिर से मिलकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। मैं जानता था कि तुम ज़रूर बच गए होंगे और किसी न किसी दिन ज़रूर मुझसे मिलोगे। आओ, इधर इन झाड़ियों के पीछे से होकर एक रास्ता जाता है।"

सिपाहियों का शोर बढ़ता जा रहा था। वे लोग शायद पहाड़ी को घेरने में लगे हुए थे। बार-बार बन्दूक की आवाज़ होती थी। हम लोग कभी झुककर आगे बढ़ते थे और कभी पेड़ों के पीछे होकर भागने लगते थे। कुछ देर बाद हम दोनों बुरी तरह थक गए और एक घने पेड़ के नीचे सुस्ताने लगे।

ऐलेन बोला, "डेविड एक बार तुमने मेरी जान बचाई है। मैं तुम्हारा बहुत ऋणी हूँ। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से तुम पर किसी तरह की आँच आने पाए, इसलिए तुम यहाँ से भाग निकलो। मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ दो। मैं इन लोगों से निपट लूँगा। तुम्हारे पास मेरा बटन तो है ही, तुम जिसे भी बटन दिखाओगे वह तुम्हारी मदद करेगा।"

लेकिन मैं अब ऐलेन का साथ नहीं छोड़ना चाहता था।

इस दुनिया में अब मेरा कोई नहीं था। मुझे एक साथी की बहुत ज़रूरत थी। खासतौर से इसलिए कि मुझे अभी अपने धोखेबाज़ चाचा से भी निपटना था। मैंने ऐलेन का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "मैं भी तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हें इस तरह

अकेले छोड़कर मैं नहीं जा सकूँगा। तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो।''

यह सुनकर ऐलेन बहुत खुश हुआ और मेरा कन्धा थपथपाते हुए बोला, ''ठीक है, मुझे तुम से यही आशा थी। लेकिन भाई, मेरे साथ तुम्हें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ेगी। अभी हम लोगों को इस तरह कई दिन तक भागते रहना पड़ेगा। चारों तरफ से हम लोगों को घेरने की कोशिश होगी। हम लोगों को जंगलों और पहाड़ों के रास्ते ही भागना होगा।''



: 9 :

इसी तरह दो दिन तक भागने के बाद हम लोग एक गाँव में पहुँचे जहाँ ऐलेन का एक साथी जेम्स रहता था। अंधेरा होने पर हम लोग चुपके से जेम्स के घर पहुँचे। जेम्स ने अपने घर के एक गुप्त कमरे में हम लोगों को ठहराया और हमारे खाने-पीने की व्यवस्था की। आधी रात तक वहाँ ऐलेन के कुछ और मित्र भी आ पहुँचे। सबने बैठकर आपस में राय की और यह तय किया कि ऐलेन को किस रास्ते से भागना चाहिए।

ऐलेन को कुछ रुपयों की भी ज़रूरत थी। लेकिन इस समय उन लोगों के पास रुपये नहीं थे। उन्होंने तीन दिन बाद एक निश्चित स्थान पर रुपया पहुँचाने का वायदा किया। इसके बाद ऐलेन ने उन लोगों से कहा, "ठीक है, अब तुम लोग हमारी यात्रा की तैयारी कर दो। एक बड़ी तलवार मुझे और एक डेविड का दे दो। हमें पिस्तौलें भी चाहिए। इसके अलावा कुछ गोली-बारूद का भी इन्तज़ाम कर दो। खाने के लिए हम लोग एक थैले में कुछ सत्तू अपने साथ रखेंगे। थैले में ही एक छोटी-सी तश्तरी साथ रख दो।"

उन लोगों ने सारी तैयारी कर दी। ऐलेन ने अपने फ्रांसीसी कपड़े उतार दिए और भेस बदलने के लिए अंग्रेज़ी पोशाक पहन



ली। फिर तैयार होकर हम लोग अंधेरे में ही गाँव से बाहर निकल आए। रास्ते में हम लोगों को पता चला कि चारों तरफ हमारी खोज हो रही है। जगह-जगह सिपाहियों के खेमे लग गए हैं। और भागने के रास्ते पर बन्दूकें लेकर चौकीदार तैनात कर दिए गए हैं। इससे हमारा रास्ता और भी मुश्किल हो गया। हम लोगों को बीहड़ जंगली रास्तों से आगे बढ़ना पड़ता था।

भागते-भागते हम लोग एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ से एक नदी दो भागों में फूटती थी। दोनों धाराओं को पार करके हमें सामने वाले किनारे पर पहुँचना था। इसमें एक जगह एक बड़ी खतरनाक चट्टान पर से कूदना था। चट्टान फिसलन से भरी हुई थी और उसकी दोनों तरफ से नदी की तेज़ धाराएँ बह रही थीं। पहले ऐलेन ने छलाँग लगाई। वह चट्टान पर जा पहुँचा।

मुझे बड़ा डर लग रहा था। लेकिन अब कोई रास्ता ही

नहीं था। मैं आँख मूँदकर चट्टान पर कूद पड़ा। अब हमें दूसरी धारा के पार कूदना था। ऐलेन इस बार भी बड़े मज़े में कूद गया। लेकिन मैं किनारे के पास ही छप्प से पानी में जा गिरा। पानी इतना तेज़ था कि अगर ऐलेन ने लपककर मेरे बाल नहीं पकड़ लिए होते तो मैं बह जाता। किसी तरह गिरते-पड़ते हम लोग आगे बढ़े।

तीन दिन बाद एक छोटे-से जंगल के पास एक आदमी हम लोगों को मिला। उसे जेम्स ने भेजा था। उसने आकर हमें खबर दी कि जेम्स और उसके कुछ नौकरों को सिपाहियों ने पकड़कर फोर्ट विलियम के किले में बन्द कर दिया है। आसपास के सारे इलाकों में सिपाही फैले पड़े हैं और ऐलेन की खोज हो रही है। न जाने कैसे यह हल्ला हो गया था कि ऐलेन ने ही गोली चलाकर तहसीलदार की हत्या की है। सरकार ने हम दोनों को पकड़ने वाले को एक सौ पौण्ड इनाम देने की घोषणा की थी। आसपास के सभी थानों में खबर भेज दी गई थी।

उस आदमी ने आगे बताया कि जेम्स की पत्नी ने बड़ी मुश्किल से कुछ रुपया इकट्ठा करके उसके लिए भेजा था। उसने एक परचा भी भेजा था, जिसे पुलिस के हर थाने में लगाया गया था और जिसमें ऐलेन और डेविड का हुलिया बताते हुए दोनों को पकड़ने वाले को इनाम की घोषणा की गई थी। उस आदमी ने हमें सोने की चार मुहरें और कुछ छोटे सिक्के दिए।

इस तरह तैयार होकर हम लोग आगे बढ़े।



: 10 :

लगभग ग्यारह घण्टे की कड़ी यात्रा के बाद सवेरा होते-होते हम लोग पहाड़ी इलाके के छोर तक जा पहुँचे। आगे कुछ दूर तक बिलकुल रेगिस्तानी ज़मीन पड़ती थी। किसी तरह गिरते-पड़ते हम लोग आगे बढ़े जा रहे थे। दोपहर होते-होते हम लोग बुरी तरह थक गए और एक जगह सो गए। पहले ऐलेन पहरा देता रहा और मैं सोता रहा, लेकिन कुछ ही देर बाद ऐलेन ने मुझे जगा दिया।

असल में मैं इतनी गहरी नींद में सोया था कि मुझे पता ही नहीं चला कि कितनी देर हुई। इसके बाद ऐलेन सो गया और मैं पहरा देने लगा। ऐलेन ने सोने से पहले एक टहनी ज़मीन में गाड़ दी और मुझसे कह दिया कि जब इसकी छाया झाड़ी के पास पहुँचे तो मैं उसे जगा दूँ, क्योंकि तब तक हमें वहाँ से रवाना हो जाना चाहिए था।

लेकिन मैं भी ऊंघने लगा और एक बार जब मैंने आँख खोली तो पाया कि मैंने ऐलेन को जगाने में बहुत देर कर दी थी। मारे शर्म और दुःख के मेरा दिल बैठा जा रहा था। अचानक मैंने देखा कि कुछ दूर घुड़सवार सिपाही हमारी तरफ बढ़े आ रहे थे। जब मैंने ऐलेन को जगाया तो पहले उसने सिपाहियों की तरफ देखा, फिर सूरज की तरफ और फिर बहुत नाराज़ होकर मेरी तरफ देखा।

मैं समझ गया कि उसका मतलब क्या था। मैं अपने कर्त्तव्य में असफल रहा था। अन्त में मैंने उससे कहा, "मुझे ब्रड़ा अफसोस है मुझसे गलती हो गई, लेकिन अब आगे क्या किया जाए?"

वह बोला, "करना क्या है, किसी तरह अपनी जान बचानी पड़ेगी। हम लोगों को अब उसी तरह भागना चाहिए जिस तरह हिरण भागते हैं। वह सामने तुम्हें जो पहाड़ दिखाई दे रहा है न, हमें उधर ही भाग निकलना चाहिए। उस पहाड़ पर कहीं भी पेड़ और झाड़ी नज़र नहीं आ रही हैं, लेकिन फिर भी चट्टानों के पीछे छिपकर हम लोग अपनी जान बचा सकते हैं।"

मैं बुरी तरह थक गया था और आगे चलने के लिए बिलकुल तैयार नहीं था। लेकिन इसके अलावा कोई चारा भी नहीं था कि हम लोग जल्दी से जल्दी पहाड़ के पास पहुँच जाएँ। मैंने ऐलेन से कहा, "मुझसे तो एक कदम भी आगे नहीं चला जाएगा। मेरे पैरों में बहुत दर्द हो रहा है। मैं कुछ देर और आराम करना चाहता हूँ।"

ऐलेन मुझे डाँटकर बोला, "आराम! सिपाही आगे बढ़े आ रहे हैं और तुम आराम करना चाहते हो! चलो मैं तुम्हें उठाकर ले चलता हूँ।"

यह कहकर उसने मुझे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन मैंने कहा, "नहीं, अभी रहने दो। तुम आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे आता हूँ।" ऐलेन तेज़ी से भागने लगा और मैं भी किसी तरह उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर अचानक किसी की सीटी की आवाज़ आई और हम लोग दुबककर ज़मीन पर बैठ गए।

इतने में तीन-चार आदमी एक झाड़ी से कूदकर हमारे सामने आ खड़े हुए। असल में ये एक दूसरे जागीरदार के आदमी थे।

उन लोगों ने हमारे हथियार छीन लिए और हमें वहीं बैठने को कहा। ऐलेन ने मुझे बताया, "ये लोग मैक्फर्सन नाम के एक जागीरदार के आदमी हैं। हमें तब तक यहीं बैठना पड़ेगा जब तक कि ये लोग अपने सरदार को मेरे आने की सूचना नहीं दे देंगे। यह मैक्फर्सन भी एक विद्रोही आदमी है। छः साल पहले जो विद्रोह हुआ था यह भी उनके नेताओं में से.एक था। इसके खिलाफ भी इनाम की घोषणा की गई थी।"

यह कहकर ऐलेन वहीं बैठे-बैठे ऊँघने लगा। लेकिन मुझे नींद नहीं आ सकी। मैं चुपचाप बैठा हुआ आसपास के दृश्य को देखता रहा। उन आदमियों में से एक अपने सरदार को खबर देने के लिए रवाना हो चुका था। कुछ देर बाद लौटकर उस आदमी ने बताया कि मैक्फर्सन ऐलेन का स्वागत करना चाहता है। यह सुनकर ऐलेन बड़ा खुश हुआ। हम दोनों उठकर उनके साथ-साथ गाँव की तरफ चल दिए। इस तरह कुछ समय के लिए सिपाहियों के चंगुल से हम लोग बच गए। ऐलेन के कहने पर दो आदमियों ने मुझे उठा लिया और मुझे कन्धों पर लादकर चलने लगे।

कुछ देर बाद हम लोग एक ढलवाँ जगह के पास आ पहुँचे, जो दो पहाड़ों के बीच एक घाटी की तरह पड़ती थी और एक हल्के जंगल से ढकी हुई थी। वे लोग हमें एक संकरी पगडण्डी से होकर पहाड़ के ऊपर ले चले। पहाड़ की चोटी पर एक छोटा-सा मकान बना हुआ था। यह मकान क्या था, हाथ से बनाया हुआ एक बड़ा-सा झोंपड़ा था। यहीं मैक्फर्सन अपने साथियों के साथ छिपकर रहता था। जब हम लोग झोंपड़े में पहुँचे तो उसने उठकर ऐलेन का स्वागत किया। वह एक चौकोर चट्टान पर बैठा था और चूल्हे पर कोई चीज़ पका रहा था। दोनों ने एक-दूसरे के

हाल-चाल पूछे। फिर ऐलेन ने मैक्फर्सन से मेरा परिचय कराया।

अन्त में मैक्फर्सन बोला, "अच्छा भाई, अब तुम लोग आराम करो। कुछ ही देर में खाना बन जाएगा। फिर हम लोग साथ-साथ खाना खाएँगे। कितने दिनों बाद आज अचानक ऐलेन के साथ खाना खाने का मौका मिला है।"

फिर दोनों मित्र एक-दूसरे को अपनी-अपनी आपबीती सुनाने लगे। मुझे यह जगह बड़ी विचित्र-सी मालूम हो रही थी। मैक्फर्सन और उसके साथी दिन में यहीं छिपकर बैठे रहते थे और रात में गाँव में अपने दोस्तों से मिलने के लिए निकलते थे।

खाना खाने के बाद मैक्फर्सन ने पुराने ताशों की एक गड्डी निकाली। उसने मुझको भी खेल में शरीक होने के लिए कहा। लेकिन मैंने इंकार कर दिया। उसने एक कोने में बिछे हुए बिस्तर की तरफ इशारा करके कहा, "तो जाओ उस पर लेट रहो। हम लोग तो अभी कुछ देर तक खेलेंगे।"

मैं बिस्तर पर जाकर लेट गया। अब मुझे पता चला कि थकावट के कारण मुझे बुखार हो गया था। थोड़ी ही देर में मेरी आँख लग गई। बीच-बीच में जब भी मेरी नींद खुली तो मैंने दोनों को खेलते हुए पाया। उन दोनों की बातचीत से मैंने यह समझ लिया कि खेल में ऐलेन की जीत हो रही थी।

दूसरे दिन भी वे लोग गप्पें मारते रहे और ताश खेलते रहे। इसके अलावा वहाँ और कोई काम ही नहीं था। खाना खाने के बाद मैं फिर से लेट गया। उधर उन दोनों का खेल शुरू हो गया। थोड़ी देर बाद ऐलेन मेरे बिस्तर के पास आया और मुझ से कुछ पैसे उधार माँगने लगा। मैंने उसको पैसे दे दिए। उस दिन शायद वह हारता चला जा रहा था। उसका चेहरा उतर गया था।



तीसरे दिन मेरी तबीयत कुछ ठीक हुई। खाना खाने के बाद उस दिन मैं झोंपड़े के बाहर ही टहलता रहा और पेड़ों की छाया में सोता रहा। दोपहर को जब मैं झोंपड़े में पहुँचा तो मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे दोनों अब भी खेल रहे थे। मुझे मालूम हुआ कि ऐलेन अपना सारा धन हार चुका था, यहाँ तक कि उसने मेरे पैसे भी गँवा दिए थे।

पहले तो मैक्फर्सन बहुत झगड़ा करता रहा, लेकिन चौथे दिन जब हम लोग वहाँ से जाने को तैयार हुए तो उसने मेरा पैसा मुझे लौटा दिया। उसके साथियों ने पता लगाकर बताया कि जाने का रास्ता काफी साफ है और हम लोगों को फौरन चल देना चाहिए। मैक्फर्सन ने अपना एक आदमी हमारे साथ भेजा, जो रास्ता भी दिखाता था और हमारा सामान भी ढोता था। वह हम लोगों को अपनी यात्रा के अगले मुकाम तक पहुँचाने वाला था।

अब हम लोगों को चलने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो रही थी। एक तो हम लोग तीन-चार दिन तक आराम कर चुके थे और दूसरे एक नौकर हमारा सामान ढो रहा था। लेकिन फिर भी रास्ते में मैंने ऐलेन से कोई बात नहीं की। उसने जुए में सारे पैसे गँवा दिए थे, इससे मैं बहुत नाराज़ था। अन्त में ऐलेन बोला, "डेविड, इस तरह एक छोटी-सी बात को लेकर दो दोस्तों में झगड़ा नहीं होना चाहिए। जो कुछ हुआ है उसके लिए मुझे बड़ा अफसोस है। तुम मुझे माफ कर दो।"

इस तरह हम दोनों में फिर से दोस्ती हो गई। दूसरे दिन शाम तक हम लोग काफी आगे निकल गए, वह आदमी यहीं तक साथ देने वाला था। इसके बाद वह वापस लौट गया। जाने के पहले उसने हमें आगे के बारे में रास्ता समझा दिया।

उसके बताए हुए रास्ते के अनुसार हम लोग आगे बढ़ने लगे। तीन दिन तक हम लोग जंगलों और पहाड़ों से होते हुए और नदी-नालों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहे। दिन में हम लोग कहीं छिपकर सो जाते थे और रात में चलते थे। पकड़े जाने के डर से हम कहीं भी आग नहीं जला सकते थे। इसलिए सत्तू खाकर ही हमें रहना पड़ता था। चलते समय मैक्फर्सन ने कुछ भुना हुआ गोश्त हमें दे दिया था। कुछ दिन तक वह भी हमारे काम आया।

लेकिन इसी बीच एक घटना घट गई। बात यह हुई कि ऐलेन अक्सर बातचीत में राजा जार्ज को गालियाँ दिया करता था। यह चीज़ मुझे बर्दाश्त नहीं होती थी। राजा के विरुद्ध विद्रोह उसने किया था, मैंने नहीं। मैं अब भी अपने को राजा की एक वफादार प्रजा मानता था। लेकिन ऐलेन बहुत पहले से विद्रोहियों के साथ था और अपने देश के साथ विश्वासघात कर रहा था। वह फ्रांस की सेना में नौकर था और वह एक तरह से इंग्लैंड का दुश्मन था।

अब तक तो मैं किसी तरह सहता आया था, लेकिन, अचानक एक दिन उसने मेरा मज़ाक बनाना शुरू कर दिया और मुझे गुस्सा आ गया। मैंने तलवार निकालकर उसे लड़ने के लिए ललकारा। लेकिन ऐलेन मेरी मूर्खता पर हँसता रहा। वह बोला, "डेविड, सोचो तो सही, तुम यह क्या कर रहे हो! मैं तो वैसे ही मज़ाक कर रहा था। अभी तो हमें काफी दूर तक एक-दूसरे का साथ देना है, ठीक है, अगर तुम्हें यह सब पसन्द नहीं है, तो आगे से मैं इस बात को अपनी ज़बान पर नहीं लाऊंगा।"

आपस में लड़ते-झगड़ते और फिर से दोस्ती करते हुए हम लोग आगे बढ़ते रहे।



: 11 :

आगे कुछ दूर चलने पर हम लोग ऐलेन के एक दूसरे साथी के घर पहुँचे, जिसका नाम था मैकलारेन। यहाँ भी हम लोगों को काफी आराम पहुँचाने की कोशिश की गई। मेरी तबीयत अभी बिल्कुल ठीक नहीं हुई थी। यहां पहुंचने पर मैं फिर से बीमार पड़ गया। एक डॉक्टर ने आकर मुझे देखा और कम से कम दस-पन्द्रह दिन तक आराम करने की राय दी।

परन्तु मेरा बुखार बढ़ता ही गया। एक सप्ताह तक मैं बिस्तर में ही पड़ा रहा। लगभग एक महीने बाद ही मैं यात्रा के योग्य हो सका। इस जगह हमें यह भी पता चला कि सिपाहियों ने अब हमारी खोज कुछ धीमी कर दी है, और हमारा पीछे करना भी कम कर दिया है।

एक महीने तक मैं मैकलारेन के घर में रहा। लेकिन कोई भी सिपाही मेरी पूछताछ करने के लिए नहीं आया। हाँ, ऐलेन ज़रूर दिन में एक दूसरी जगह छिपा रहता था और रात में मुझसे मिलने के लिए आया करता था।

ऐलेन का विचार था कि हमारी खोज ज़्यादा सख्ती से नहीं होगी। इसलिए अब हमें जंगलों में भागते फिरने के बजाय सीधा रास्ता अपनाना चाहिए और फोर्थ नामक स्थान के लिए रवाना

हो जाना चाहिए। रास्ते में नदी पर 'स्टरलिंग' किले के पास जो पुल पड़ता था वहीं फोर्थ की तरफ जाने का सबसे आसान रास्ता था। हमें आशा थी कि हम लोग बिना किसी रोक-टोक के पुल के पार हो जाएँगे।

पुल के पास पहुँचकर हम लोगों ने थोड़ी देर तक आराम किया और फिर आगे बढ़े। लेकिन तभी अचानक एक सन्तरी की आवाज़ गूँज उठी। ऐलेन ने झुककर खेतों के बीच से भागना शुरू कर दिया। मैं भी उसके साथ-साथ भाग रहा था, लेकिन अब उसका साथ देने का मेरा मन नहीं था। पुल पार करने के बाद ही हम लोग आसानी से फोर्थ पहुँच सकते थे। फोर्थ पहुँचकर मैं 'क्वीन्स फेरी' में वकील मि. रैंकिलर से मिलकर अपनी वसीयत का पता लगाना चाहता था। लेकिन फिर से यह भाग-दौड़ आरम्भ हो गई थी।

खैर, किसी तरह गिरते-पड़ते हम लोगों ने दूसरे रास्ते से फोर्थ की तरफ बढ़ना शुरू किया। कुछ ही समय बाद हम लोग 'क्वीन्स फेरी' के समीप जा पहुँचे। वहीं नदी के दक्षिणी किनारे पर मि. रैंकिलर का घर था, जिनके पास मेरी वसीयत का कुछ धन रखा हुआ था। अभी हम लोग नदी के उत्तरी किनारे पर थे और हमें नदी पार करने की कोई तरकीब सोचनी थी।

बहुत कोशिश करके ऐलेन ने एक कंजड़िन से बातचीत पक्की की। वह अपना माल लेकर उस पार जाने वाली थी। हम लोग भी कंजड़ों का भेष बनाकर उसके साथ नाव में बैठ गए और चुपचाप उस पार उतर गए। उस पार पहुँचकर हम लोगों ने तय किया कि ऐलेन गाँव के बाहर खेतों में ही छिपा रहेगा और मैं अकेला मि. रैंकिलर से मिलने के लिए जाऊँगा।

रात हम लोगों ने वहीं नदी-किनारे बिताई। सवेरा होने पर मैंने 'क्वीन्स फेरी' की सड़क पकड़ी। किसी तरह पूछते-पाछते मैं मि. रैंकिलर के घर के पास पहुँचा। पूछने पर पता चला कि मि. रैंकिलर अन्दर ही हैं। पहले तो नौकरों ने मुझे वहाँ से भगा देने की कोशिश की, लेकिन अन्त में उन्होंने मुझे अन्दर बैठक में पहुँचा दिया।

पहले तो मि. रैंकिलर बड़े गौर से मुझे देखते रहे। मेरे बाल रूखे और बिखरे हुए थे। कपड़े फटकर तार-तार हो चुके थे। जूते भी फट रहे थे और घुटने तक पैर धूल से सने थे। अन्त में उन्होंने मुझ से कुछ प्रश्न किए। मैंने उन्हें बताया, "मेरा नाम डेविड बेल्फोर है और शा परिवार की सम्पत्ति में मेरा भी कुछ हिस्सा है।"

यह सुनकर मि. रैंकिलर अपनी फाइल में से कुछ कागज़ निकाल लाए और उसको ध्यान से पढ़ने लगे। इसके बाद उन्होंने मुझसे कहा, "तुम्हारी बात तो ठीक मालूम होती है, डेविड। लेकिन यह बताओ कि तुम्हारे पास कोई गवाह भी है।"

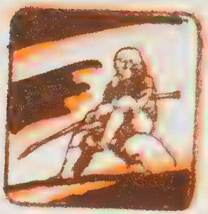
मैंने कहा, "जी हाँ, मेरे गाँव के पादरी मि. कैम्पबेल मेरे गवाह हैं। उन्होंने मुझको आपका पता बताया था और फिर अपने चाचा मि. ऐबेनेज़ेर बेल्फोर के पास रहने के लिए भेजा था।"

इसके बाद मैंने मि. रैंकिलर को शुरू से लेकर अब तक का अपना पूरा किस्सा कह सुनाया। मैंने उनको बताया कि किस तरह इसी नगर के पास मुझे ज़बरदस्ती एक जहाज़ में भगाया गया। इसमें मेरे चाचा और जहाज़ के कप्तान होसीज़न का कितना हाथ था। इसके बाद जहाज़ किस तरह दुर्घटनाग्रस्त हो गया और किस तरह मैं इतने दिनों तक इधर-उधर, मारा-मारा फिरता

रहा। जब मैंने उन्हें ऐलेन के बारे में बताया तो वे कुछ चौंके क्योंकि एक विद्रोही के रूप में ऐलेन काफी प्रसिद्ध हो चुका था। मेरा किस्सा सुनकर वे बोले, "अच्छा, इतनी छोटी उम्र में ही तुमने इतने सारे काम कर डाले और इतनी दुनिया देख डाली! तुमने बड़ा कष्ट उठाया है। लेकिन अब मुझे लगता है कि तुम्हारे कष्टों का अन्त समीप ही है।"

इसके बाद वकील साहब ने मुझे हाथ-मुँह धोने और आराम करने को कहा। उन्होंने अपने लड़के के कपड़े मुझको पहनने के लिए दिए और अच्छा खाना खिलाया।





: 12 :

जब मैं खा-पीकर तैयार हो गया तो मि. रैंकिलर मुझे अपने पढ़ने के कमरे में ले गए और मुझे अपने सामने बैठाकर बोले, ''अच्छा डेविड, अब कुछ काम की बातें हो जाएँ। तुम शायद मुझसे कई बातों के बारे में पूछना चाहते हो। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगा। पहले शायद तुम अपने पिता और चाचा के सम्बन्ध में जानना चाहते होंगे। तो पहले अपने चाचा के बारे में सुनो—तुम्हारे चाचा मि. ऐबेनेज़र हमेशा इस तरह बूढ़े और बदसूरत नहीं रहे हैं। अपनी जवानी के दिनों में वे बड़े साहसी और उत्साही नवयुवक थे। सन् 1715 में वे विद्रोहियों के दल में शरीक होने के लिए घर से भाग निकले। तुम्हारे पिता ने ही उनका पता लगाया और उनको घर लाए।

''इसके बाद एक विचित्र बात हुई। दोनों भाई एक सुन्दर स्त्री से प्रेम करने लगे। लेकिन वह बड़ी चालाक थी। उसने दोनों में से किसी की दाल नहीं गलने दी। दोनों को अपने पास से भगा दिया। इस मामले को लेकर दोनों भाइयों में खटपट हो गई। वे आपस में एक-दूसरे पर सन्देह करने लगे।

''लेकिन फिर न जाने कैसे उस महिला का विचार बदल गया और इधर दोनों भाइयों में एक बात पर समझौता हो गया।

यह तय हुआ कि जो आदमी उस महिला से शादी करे, वह अपनी पारिवारिक सम्पत्ति का हक दूसरे को दे दे। इस तरह तुम्हारे पिता ने उस महिला से शादी की और तुम्हारे चाचा ने सारी सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर लिया।

"तुम्हारे माता-पिता ज़िन्दगी-भर गरीब ही रहे और गरीबी में ही मरे। तुम्हारा पालन-पोषण भी बड़ी मुश्किल से हुआ। उधर तुम्हारे चाचा तुम्हारे पुश्तैनी मकान में तरह-तरह के किराएदारों को बसाते रहे और खूब रुपया बटोरते रहे। उन्होंने शादी नहीं की और उनके कोई सन्तान नहीं है।"

यह कहकर वे कुछ देर तक चुप रहे और फिर बोले, "इस तरह अपने पुश्तैनी मकान और सारी सम्पत्ति के वारिस तुम्हीं हो। लेकिन तुम्हारे चाचा ज़रा टेढ़े आदमी हैं। वे आसानी से एक छदाम भी नहीं देंगे और मुकदमेबाज़ी से कोई लाभ नहीं होगा। एक तो इससे बदनामी होती है, दूसरे अगर मुकदमे के दौरान कहीं बात खुल गई कि ऐलेन जैसे विद्रोही आदमी से तुम्हारा साथ रहा है तो फिर सारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाएगा।

"ऐसी हालत में मैं तो यही राय दूँगा कि तुम अपने चाचा से कोई समझौता कर लो। उस मकान पर अभी उन्हीं का कब्ज़ा रहने दो। बाद में वह तुम्हें मिल ही जाएगा और तुम उनसे किसी माहवारी भत्ते की बात तय कर लो।"

मैंने कहा कि मैं आपकी राय से सहमत हूँ। उन्होंने कुछ कागज़-पत्र तैयार किए और फिर अपने मुंशी को साथ लेकर वे मेरे साथ ऐलेन से मिलने के लिए चले। वे इस मामले में ऐलेन से भी कुछ मदद लेना चाहते थे। मैं उनको उस जगह

ले गया जहाँ ऐलेन छिपकर रहता था। ऐलेन को सारी स्थिति बताई गई। वह मेरी मदद करने के लिए तैयार हो गया।

फिर हम सब लोग चाचा से मिलने के लिए चल पड़े। वह मकान यहाँ से कुछ ही दूर था। लेकिन वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते रात हो गई। अब मैं अपने उस खण्डहरनुमा पुश्तैनी मकान के पास पहुँचा तो सारी घटनाएँ याद करके मैं एक बार काँप उठा। मैं सोच रहा था कि जब चाचा मुझे इतने लोगों के साथ देखेंगे तो उनकी क्या हालत होगी। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मकान में कहीं भी रोशनी नज़र नहीं आ रही थी। ऐसा लगता था कि चाचा शायद सो गए थे।

हम लोगों ने मकान से कोई पचास गज़ दूर ही रुककर आपस में तय किया कि किस तरह हमें चाचा का मुकाबला करना है। चाचा बिना बन्दूक हाथ में लिए कभी घर के बाहर नहीं आते थे। इसलिए वकील साहब की राय से यह तय हुआ कि मैं वकील साहब और उनके मुंशी के साथ मकान के बिलकुल पास चला जाऊं। वहीं किसी जगह हम लोग छिपकर बैठे रहें और ऐलेन आगे बढ़कर दरवाज़ा खटखटाए।



: 13 :

हम लोग दरवाज़े के पास ही खम्भों की आड़ में छिपकर खड़े हो गए। ऐलेन ने दो-तीन बार दरवाज़ा खटखटाया। अन्त में ऊपर की खिड़की खुली और चाचा ने उसमें से झाँककर पूछा, "कौन है रे? आधी रात को कौन दरवाज़ा पीट रहा है? इतनी रात गए कोई भला आदमी किसी के घर नहीं जाता! कौन हो तुम? जानते हो मेरे पास बन्दूक है! मैं यहीं से गोली मारकर तुम्हें ढेर कर दूँगा!"

ऐलेन ने खिड़की की ओर देखते हुए कहा, "क्या आप ही मि. बेल्फोर हैं। मुझे मि. ऐबेनेज़र बेल्फोर से मिलना है।"

चाचा ने नाराज़ होकर कहा, "हाँ-हाँ, मैं ही हूँ बेल्फोर। लेकिन तुम क्या चाहते हो? किस काम से यहाँ आए हो?"

ऐलेन बोला, "मैं डेविड के काम से आया हूँ। आप ज़रा नीचे आइए और बात कर लीजिए।"

इसके जवाब में चाचा कुछ बड़बड़ाते। लेकिन फिर खिड़की में गायब हो गए और कुछ देर बाद नीचे आकर उन्होंने दरवाज़ा खोला। बन्दूक ताने हुए वे दरवाज़े के बाहर निकले और बोले, "तुम्हें जो कुछ कहना है, जल्दी कह डालो। लेकिन खबरदार,

अगर तुमने कोई गड़बड़ की तो मैं यहीं गोली मार दूँगा!''

ऐलेन ने हँसते हुए कहा, ''आप तो बेकार ही नाराज़ हुए जा रहे हैं। उलटे आपको इस बात से खुश होना चाहिए कि मैं आपके भतीजे की खबर लेकर आया हूँ। बात यह है कि जिस जहाज़ में आपका भतीजा डेविड यात्रा कर रहा था, वह जहाज़ एक जगह डूब गया। डेविड किसी तरह बचकर किनारे लग गया और जंगल में इधर-उधर भटकने लगा। मेरे मित्रों ने उसकी मदद की और उसे अपने गाँव ले आए। अब मेरे मित्रों का कहना है कि आप कुछ रुपये इनाम के रूप में दीजिए तो वे आपके भतीजे को यहाँ भेज देंगे।''

चाचा ने कहा, ''अपने मित्रों से कहो कि वे बहुत बड़े बेवकूफ हैं? मैं उनको एक भी धेला नहीं दूंगा। अपना भतीजा मुझे इतना प्यारा नहीं है लेकिन वे लोग उसको इस तरह रख नहीं सकेंगे। उनको कहो कि लड़के को फौरन छोड़ दें और यहाँ आने दें।''

ऐलेन ने ज़रा सख्ती से कहा, ''जी नहीं, बिना पैसा लिए वे लोग डेविड को नहीं छोड़ेंगे! आप अपने भतीजे को बचाना चाहते हों तो रुपये दे दीजिए, वरना उसको मार डाला जाएगा। आपको उतना रुपया तो फौरन दे देना पड़ेगा जितना आपने कप्तान होसीज़न को लड़के को भागने के लिए दिया था!''

चाचा ने उसे डाँटते हुए कहा, ''यह क्या बक रहे हो तुम! तुम्हारा मतलब यह था कि मैंने लड़के को बेचा था? यह बिलकुल गलत और झूठ बात है। न तो मैंने लड़के को बेचा और न उसको किसी ने भगाया। क्या कप्तान ने तुमको कुछ बताया है।''

ऐलेन ने कहा, ''और क्या हुज़ूर ! मैं यह सब अपने मन

से थोड़े ही कह रहा हूँ। कप्तान होसीज़न मेरा साझीदार है।"

चाचा सोचते रहे और बोले, "देखो भाई, यह सब तो ठीक है, लेकिन मैं तुम्हें ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने होसीज़न को बीस पौंड दिए थे। वह लड़के को करोलीना में ले जाकर बेचने वाला था। उसे पैसा मिलता, उसमें भी मेरा कोई हिस्सा नहीं था।"

चाचा के इतना कबूलते ही वकील मि. रैंकिलर अचानक खम्भे के पीछे से बाहर निकल आए और ऐलेन का नाम बदलकर उससे बोले, "बस कीजिए मि. थामसन, आपने हमारी बड़ी मदद की!" फिर वे चाचा की ओर मुड़कर बोले, "कहिए, मि. बेल्फोर नमस्कार! आपने मुझे पहचाना? मैं वकील रैंकिलर हूँ।"

तब तक मैं भी आ गया और बोला, "नमस्कार चाचा!"

चाचा को काटो तो खून नहीं। वे आँखें फाड़े हम लोगों की तरफ देखते रह गए। उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। ऐलेन ने आगे बढ़कर उनके हाथ से बन्दूक छीन ली और वकील ने उनके कन्धे पर हाथ रखकर बड़े अदब के साथ कहा, "आइए, हम लोग अन्दर चलकर बातें करें।"

हम सब लोग अन्दर रसोईघर में गए। मैंने यहाँ जलती हुई आग में कुछ और लकड़ियाँ डाल दीं। सब लोग टेबल के आस-पास बैठकर बातें करने लगे। खूब डराने-धमकाने के बाद चाचा वकील की इस बात पर राज़ी हुए कि मेरी पुश्तैनी जायदाद से जो कुछ आमदनी होती है, उसका दो-तिहाई हिस्सा मुझे मिलेगा। उसी समय मुंशीजी ने ज़रूरी कागज़ात पेश किए और चाचा से उस पर दस्तखत करवाए गए। चाचा आसानी से राज़ी नहीं हो रहे थे, लेकिन उनके सामने और कोई चारा नहीं था। वकील साहब ने उनको धमकी

दी थी कि अगर वे नहीं मानेंगे तो सारी बात पुलिस को बता दी जाएगी और फिर वे मुसीबत में फँस जाएँगे। उसी रात को हम लोग वापस मि. रैंकिलर के घर लौट आए।

दूसरे दिन सवेरे ऐलेन मुझसे विदा लेने वाला था। ऐलेन ने मेरी बड़ी मदद की थी। उससे अलग होने की मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं थी। लेकिन वह जल्दी से जल्दी फ्रांस भाग जाना चाहता था। वकील साहब ने मेरे कहने पर उसकी आगे की यात्रा का इन्तज़ाम करा दिया। हम लोग दो-तीन गाँव आगे तक ऐलेन को छोड़ने के लिए गए। जब हम एक-दूसरे से विदा हुए तो दोनों की आँखों में आँसू भर आए थे।

कुछ दिन बाद मुझे ऐलेन की चिट्ठी मिली कि वह सही-सलामत फ्रांस पहुँच गया है। उसने चिट्ठी में मुझे और वकील साहब को धन्यवाद दिया।

कुछ दिनों तक और मि. रैंकिलर के यहाँ रहने के बाद मैं वापस अपने गाँव लौट आया। पादरी मि. कैम्पबेल मुझसे मिलकर बड़े खुश हुए। अब मुझे रुपये-पैसे की कोई कमी नहीं थी। अपनी पुश्तैनी जायदाद की आमदनी का दो-तिहाई हिस्सा हर साल मुझे मिलने वाला था। रुपये उधार ले लिए थे। चाचा के मरने के बाद उस मकान पर मेरा ही कब्ज़ा होने वाला था।

पादरी साहब की मदद से मैंने उस मकान को खरीद लिया जिसमें मैं अपने पिताजी के साथ रहता था। सारा इन्तज़ाम करके मैंने पढ़ाई-लिखाई की तरफ ध्यान देना शुरू किया। इस प्रकार मेरे बचपन की विचित्र कहानी समाप्त हुई।

□□

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindb
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Se

MAXIMUM RETAIL PRICE INCLUSIVE OF ALL TAXES Rs 25.00

ISBN 81-7483-04

9 788174 830449

रु. 25/-

शिक्षा भारती